वर्ष 24 | अंक 9 | अप्रैल, 2023

ISSN No. 2582-4546

₹ 30

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

अणुविभा

क्या आप जानते हो ?
विश्व के प्रमुख धर्म और उनकी शिक्षाएँ

हिन्दू धर्म :
जैसे कर्म होंगे वैसे ही फल मिलेंगे।
भगवान पर भरोसा रखो, बाकी सब व्यर्थ है।
सत्य में विश्वास रखो।
मोक्ष अर्थात् जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति की कामना करो।

जैन धर्म :
अहिंसा – सभी प्रकार की हिंसा से बचो।
सत्य – झूठ मत बोलो।
अस्तेय – चोरी मत करो।
अपरिग्रह – अनावश्यक संग्रह मत करो।
ब्रह्मचर्य – इन्द्रियों पर नियन्त्रण रखो।

बौद्ध धर्म :
किसी प्राणी को मत मारो।
चोरी मत करो।
इन्द्रियों का दुरुपयोग मत करो।
झूठ मत बोलो, नशा मत करो।

ईसाई धर्म :
अपने पड़ोसी को प्रेम करो।
अपने दुश्मन को माफ़ कर दो।
अपने पापों के लिए भगवान से माफ़ी माँगो ।
किसी से घृणा मत करो ।

इस्लाम धर्म :
अल्लाह की इबादत करो, मूर्ति पूजा मत करो
सादगीपूर्ण जीवन जिओ
भगवान का दिल जितने प्रार्थना करो
जरूरतमंदों की मदद के लिए दान करो
पवित्र माह में सुबह से शाम रोजा (उपवास) रखो

सिख धर्म :
भगवान के समक्ष प्रत्येक इनसान समान है।
धार्मिक क्रियाकांड और अन्धविश्वास अर्थहीन हैं।
सबके साथ प्रेम और ईमानदारी से रहो।
नशा मत करो।
निःस्वार्थ भाव से सेवा करो।

कहाँ क्या?

आलेख

चन्द्रशेखर सिंह	: —	— 11
उधारी की आदत	: नरेन्द्र श्रीवास्तव	— 22
विश्व खेल दिवस	: अनिल जायसवाल	— 26
रफ्तार देने वाले हेनरी फोर्ड	: हरीश चंद्र पांडे	— 28
मेरा देश : गाँव विशेष	: शिखर चन्द जैन	— 34
स्टैच्यू ऑफ इक्वेलिटी	: नीलम राकेश	— 38
रंग बिरंगे सुन्दर तोते	: शिवचरण चौहान	— 48

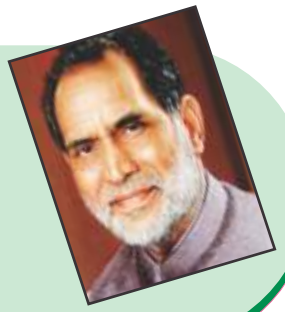

कहानी

ट्रेन के नीचे	: रजनीकान्त शुक्ल	— 07
हिम्मत मिली	: अलका 'सोनी'	— 09
मोबाइल पर गेम	: डॉ. अलका जैन 'आराधना'	— 15
बोल है अनमोल	: राजा चौरसिया	— 19
कुदरत की देन	: डॉ. ज्योति शर्मा	— 23
आदत में सुधार	: हर प्रसाद रोशन	— 31
ताश का खेल	: हरदेव सिंह धीमान	— 35
स्कूल की रौनक	: डॉ. रंजना जायसवाल	— 39
दादा जी की छड़ी	: अशोक पटेल 'आशु'	— 47

कविता-गीत

कहाँ गया पेड़	: डॉ. नितेश व्यास	— 06
गरमी के दिन	: डॉ. फहीम अहमद	— 10
रखना साफ सफाई	: धर्मेन्द्र सिंह 'धरम' मैनपुरिया	— 10
चूहे राजा	: नीता अवस्थी :	— 13
राजा रानी	: सीताराम गुप्ता	— 18
पर्वत की रानी	: डॉ. रामनिवास 'मानव'	— 18
मेरी प्यारी बिल्ली	: राजेश आहूजा	— 30

विविधा

विस्मयकारी भारत	: रवि लायटू	— 14	देश प्रेम	: पुष्पेशकुमार 'पुष्प'	— 25
वर्ग पहेली	: राधा पालीवाल	— 17	दिमागी कसरत	: राजेन्द्र प्रसाद श्रीवास्तव	— 32
इको फ्रेंडली होली	: प्रभा सेठिया	— 21	चित्र पहेली	: चाँद मोहम्मद घोसी	— 40
बूझो तो जानें	: डॉ. राकेश चक्र	— 25	Secret of Indian Sweets		— 46

स्तम्भ

सम्पादक की पाती –05, महाप्रज्ञ की कथाएँ– 06, जीवन विज्ञान के प्रयोग–08, आओ पढ़ें : नई किताबें – 21, प्रेरक वचन, अन्तर ढूँढ़िये– 30, सुडोकू–33, व्हाट्सएप कहानी– 33, दस सवाल : दस जवाब, जरा हँस लो,–37, पढ़ो और जानो, उत्तरमाला– 41, कलम और कूँची– 42, नन्हा अखबार– 44, जन्मदिन की बधाई – 46, किड्स कॉर्नर– 49, अणुव्रत अमृत महोत्सव – 51

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

वर्ष : 24 अंक : 9 अप्रैल, 2023

प्रकाशक
अणुव्रत विश्व भारती
सहयोगी संस्थान
भागीरथी सेवा प्रन्यास

सम्पादक | संचय जैन 98290 52452
सह सम्पादक | प्रकाश तातेड़ 93515 52651
प्रबन्ध सम्पादक | निर्मल राँका, पंचशील जैन
कार्यालय | चन्द्रशेखर देराश्री
ग्राफिक डिजायन | गजेन्द्र दाहिमा
चित्रांकन | सुशील कुमार, दीपिका

अध्यक्ष | अविनाश नाहर
महामन्त्री | भीखम सुराणा
कोषाध्यक्ष | राकेश बरड़िया
प्रकाशन मन्त्री | देवेन्द्र डागलिया
संयोजक, पत्रिका प्रसार | सुरेन्द्र नाहटा

सम्पादकीय कार्यालय

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी (अणुविभा)
चिल्ड्रन'स पीस पैलेस
पोस्ट बॉक्स सं. 28
राजसमन्द – 313324 (राजस्थान)
bachchon_ka_desh@yahoo.co.in
9414343100

सदस्यता शुल्क

त्रैवार्षिक : 900 रु.
पंचवार्षिक : 1500 रु.
दस वर्ष : 3000 रु.
पंद्रह वर्ष : 7500 रु.

(कोरियर द्वारा 300 रु अतिरिक्त प्रतिवर्ष)
विदेश के लिए वार्षिक शुल्क $ 20

प्रकाशक मुद्रक व सम्पादक

संचय जैन द्वारा अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी, राजसमन्द के लिए प्लेजर डिजिटल प्रेस, 10, गुरु रामदास कोलोनी, उदयपुर (राज.) के लिए चौधरी ऑफसेट प्रा. लि. उदयपुर से मुद्रित एवं चिल्ड्रन'स पैलेस, राजसमन्द से प्रकाशित
ISSN No. 2582-4546

सदस्यता शुल्क भेजने के तीन तरीके -

नकद / चैक / ऑनलाइन	UPI	RAZOR PAY
ANUVRAT VISHWA BHARTI SOCIETY IDBI Bank BRANCH Rajsamand A/c No. : 104104000046914 IFSC : IBKL0000104		https://rzp.io/l/uGTBPsrRx

Send Payment Information On Whatsapp No. 9116634513

'बच्चों का देश' मासिक में प्रकाशित रचना व चित्र सहित समस्त सामग्री के प्रकाशन का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लिखित अनुमति प्राप्त कर इनका उपयोग किया जा सकता है। समस्त कानूनी मामलों का न्याय क्षेत्र केवल राजसमन्द होगा।

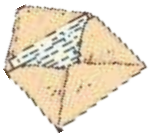

सम्पादक की पाती

मेरे भगवान
जरा रुको!
मुझे छोड़ कर
कहाँ दूर
चले जा रहे हो तुम?
जब मैं नादान था
तुम मुझ में
समाए रहते थे,
अपनी दिव्यता से
तुम मुझे
सजाए रखते थे,
लेकिन, अब
जब मुझे
समझ आने लगी है
दूरी मुझ से क्यों
तुम्हारी बढ़ने लगी है?
मेरी नजरों से
ओझल हो जाओ,
उससे पहले
भगवान रुको!
ऐसी समझदारी
मुझे नहीं गवारा
जो मुझे
तुमसे जुदा कर दे,
मैं नासमझ ही अच्छा
तुम मुझे फिर से
बच्चा बना दो!
जरा रुको
मेरे भगवान
तुम मुझे फिर से
सच्चा बना दो!

प्यारे बच्चो,

इस कविता में एक गहरा संदेश छुपा है। ''बच्चों में भगवान रहते हैं'' – यह बात आपने सुनी होगी। लेकिन जब बच्चा बड़ा बन जाता है, कहने को 'समझदार' बन जाता है, तब क्या भगवान उसे छोड़ कर कहीं ओर चले जाते हैं? ऐसी समझदारी किस काम की जो हमें भगवान से अलग कर दे? ऐसी समझदारी को समझदारी भी कैसे कहा जा सकता है जो हमें अच्छाई से अलग कर दे और बुराई का रास्ता दिखाए?

बच्चो, आपके पास यह मौका है कि आप में भगवान के जो अंश हैं, सच्चाई, अच्छाई, ईमानदारी, विनम्रता, सरलता और मासूमियत के रूप में... उन्हें हमेशा अपने अन्दर बनाए रखें ताकि बड़े होने पर भी आपको यह पछतावा न हो कि भगवान आपसे दूर चले गए हैं। दिल से शुभकामना।

आपका ही,
संचय

महाप्रज्ञ की कथाएँ

अपने को अच्छा बनाओ

एक सामूहिक भोज में भोजन परोसने वाले द्वारा पापड़ परोसा जा रहा था। एक व्यक्ति को पापड़ देते समय वह पापड़ थोड़ा खंडित हो गया। परोसने वाले ने बिना किसी दुर्भाव के वह खंडित पापड़ ही परोस दिया। भोजन करने वाले व्यक्ति को बहुत बुरा लगा। उसने सोचा कि– "सबको पूरा पापड़ देते हुए इसने मुझको अपमानित करने के लिए खंडित पापड़ दिया है। ठीक है, मैं भी बदला लूँगा।"

उस व्यक्ति ने मन–ही–मन अपमान को गाँठ में बाँध लिया। उसके पास रुपये नहीं थे, लेकिन कर्ज करके सारे ग्राम को भोजन के लिए बुलाया। अन्त में पापड़ परोसने स्वयं आया और उस व्यक्ति को खंडित करके पापड़ परोसा, जिसने उसे खंडित पापड़ परोसा था। सेठजी ने पापड़ खाना शुरू कर दिया। इस व्यक्ति ने हँसते हुए कहा– "सेठजी, मैंने आपको खंडित पापड़ परोसकर बदला ले लिया है। याद है आपने भी मुझे खंडित पापड़ परोसा था!"

सेठजी ने हँसकर कहा– "मूर्ख! क्या उसी बदले के लिए इतना कर्ज किया है? अच्छा होता मुझे अकेले ही बुलाकर अपना बदला ले लेता।"

कथाबोध : समझदार व्यक्ति बोलता नहीं। हमें अपमान–सम्मान में सम भाव से रहने का अभ्यास करना चाहिये।

पद्य कथा

कहाँ गया पेड़

कहाँ गया वो पेड़ सुहाना,
दिखता था जो खिड़की से,
मम्मी बोली चोर ले गये
बेटा सोजा जल्दी से।

मैंने कहा नहीं सोऊँगा
पूरी बात बताओ तुम,
अभी तो था और अभी नहीं
क्यूँ? मुझको समझाओ तुम।

माँ बोली कुछ चोर लुटेरे
रोज रात को आते थे,
कभी काटते बाँहें उसकी
कभी पाँव कटवाते थे।

बचा हुआ वह पेड़ बेचारा
रोज ही रोया करता था,
हम जैसे लोगों का मन तो
फिर भी सोया करता था।

सारे पंछी छोड़ उड़ गये
बन्दर भी सब लौट गये,
प्राणी जो थे प्राण से प्यारे
एक एक कर सब छोड़ गये।

तब जीवन लगता था भारी
उसको अपने होने में,
उसने खुद ही खुद को गिराया
एक सड़क के कोने में।

माँ की कहानी समझ न आई
बच्चे को, वो क्या बोले?
आँख बरसती बहा पसीना
मम्मी से वो क्या बोले?

मुख में बोल नहीं थे उसके
हाथों में था माँ का हाथ,
यादों में झूला था उसकी
और आँखों में पेड़ उदास।।

डॉ. नितेश व्यास
जोधपुर (राजस्थान)

ट्रेन के नीचे

नौ साल का रियाज अपने दोस्तों के साथ नीबू पार्क से डालीगंज पुल के पास से लौट रहा था। उसकी निगाह रेलवे लाइन पर चलते हुए कुछ लोगों पर पड़ी। उनमें साबिर अली और उनके साथ उनकी सात साल की बेटी शाजिया थी। तभी अचानक रियाज को उसी पटरी पर सामने से आती हुई कोचीन एक्सप्रेस ट्रेन दिखाई दी। पहले तो रियाज समझा कि शायद आने वाली ट्रेन अपनी पटरी बदल लेगी। मगर जैसे–जैसे वह करीब आती जा रही थी उसे पूरा विश्वास हो गया कि वह उसी पटरी पर आ रही थी जिस पर शाजिया बीचों बीच में चलती चली जा रही थी।

रियाज ने आवाज देकर उन्हें सावधान करने की कोशिश की। मगर साबिर पता नहीं किस धुन में था। न उनका और न शाजिया का ध्यान रियाज की आवाज की ओर जा पाया। जब साबिर अली की ओर से कुछ प्रतिक्रिया नहीं देखी तो रियाज तुरन्त आगे बढ़ा। गाड़ी अब बिलकुल सिर पर आ चुकी थी। उसने दूसरा निर्णय ले लिया। वह अपनी जान की परवाह न करते हुए तेजी से आगे बढ़ा और उसने शाजिया को पटरी से हटा कर बाहर की ओर करना चाहा ताकि वह ट्रेन की चपेट में न आ जाए।

उसने सोचा था कि वह शाजिया को पटरी से दूर हटाकर उसकी जान बचा लेगा। मगर जो भी हम सोचते हैं वैसा ही हमेशा नहीं होता। रियाज का ध्यान सामने से तेजी के साथ बढ़ती आ रही ट्रेन और उसकी चपेट में आने जा रही शाजिया पर था। इसके बीच बहुत सारी चीजें थीं जिन पर भी उसको ध्यान करना था। जैसे कि दौड़ते हुए उसे खुद को सँभालना था। बस यहीं उससे गलती हो गई। तेजी से दौड़ते हुए उसका पैर पटरी में फँस गया।

जरा सी तालमेल में गड़बड़ी हुई कि सारा परिदृश्य बदल गया। उधर सामने से एकदम तेज रफ्तार ट्रेन सिर पर पहुँच गई। इधर रियाज का पैर फँस गया। अचानक बचाने के प्रयास से साबिर अली रियाज और शाजिया तीनों पटरी पर गिर गए। जिससे शाजिया का दाहिना पैर गाड़ी के नीचे आ गया। साबिर अली के साथ–साथ उसे बचाने के क्रम में रियाज भी उस दुर्घटना का शिकार हो गया।

ट्रेन के ड्राइवर ने कुछ–कुछ समझा और लोगों ने चिल्लाकर भी बताया। कुछ गड़बड़ हुई जानकर गाड़ी आगे जाकर रुक गई। लोगों ने आकर देखा तो तीनों बुरी तरह घायल खून से सने पटरियों के आस पास पड़े थे। उस घायल स्थिति में उन्हें

देखें पृष्ठ 13...

जीवन विज्ञान के प्रयोग

धैर्य से सफलता

कुछ लोगों का दिमाग इतना अस्थिर होता है कि अच्छी प्रतिभा के बावजूद वे जीवन में सफल नहीं होते। वे कोई काम शुरू करते हैं और उसे बीच में ही छोड़कर फिर नया काम शुरू करते है और उसे बीच में ही छोड़कर फिर नया काम शुरू कर देते हैं। नतीजा होता है असफलता। एक अँग्रेज युवक इसी तरह नए–नए काम शुरू करता पर थोड़ी सी कठिनाई आते ही बीच में छोड़ देता। चालीस वर्ष की जिन्दगी बीत गई पर वह एक भी कार्य पूरा न कर सका। इससे उसकी मानसिक स्थिति अस्त–व्यस्त हो गई। स्वयं के प्रति वह घोर असंतोष का अनुभव करने लगा।

उस युवक ने एक दिन इंग्लैण्ड के विख्यात डॉ. जॉन हेक्टर को अपनी सारी स्थिति बताई। डॉक्टर ने उसके रोग का निदान करते हुए कहा– ''मित्र, किसी भी काम को शुरू करने से पहले आदमी को अपनी योग्यता और अन्य सभी परिस्थितियों का गंभीर आकलन करना चाहिए। जिस काम में सफलता मिलने की सम्भावना नहीं हो उसमें सोच समझ कर ही हाथ डालना चाहिए। पहले योजना को अच्छी तरह समझ कर हाथ में लो और उसको धैर्य के साथ पूरा करो। दुनिया में ऐसा कोई भी काम नहीं होता जिसमें कठिनाई न आती हो। कठिनाइयों के डर से काम को बीच में नहीं छोड़ना चाहिए। हर कार्य में धैर्य की आवश्यकता होती है। जब तक धैर्यपूर्वक उसको पूरा नहीं करोगे, तब तक सफलता नहीं मिलेगी।''

इस दिशा दर्शन से उस युवक को प्रगति का सही मन्त्र मिल गया। उसने जीवन में धैर्य धारण करने का दृढ़ संकल्प लिया और सोते उठते उसके दिमाग में एक ही मन्त्र घूमता था। वह था धैर्य। उसी युवक ने बाद में अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न किए।

धैर्य को चरित्र का स्थाई अंग बनाने के लिए, अनुप्रेक्षा का अभ्यास बहुत उपयोगी है।

धैर्य की अनुप्रेक्षा–

1. महाप्राण ध्वनि (2 मिनट)
2. कायोत्सर्ग (5 मिनट)
3. पीले रंग का श्वास ले और अनुभव करें–

श्वास के साथ पीले रंग के परमाणु भीतर प्रवेश कर रहे हैं। (3 मिनट)

4. प्राण केन्द्र पर पीले रंग का ध्यान करें। (3 मिनट)
5. प्राण केन्द्र पर ध्यान केन्द्रित कर अनुप्रेक्षा करें।

"मैं परिस्थिति को झेलने की क्षमता को विकसित करूँगा। उससे पराजित नहीं होऊँगा।"

इस शब्दावली का नौ बार उच्चारण करें, फिर इसका नौ बार मानसिक जप करें। (5 मिनट)

6. अनुचिन्तन करें जिसमें उतावलापन होता है, जो उचित समय की प्रतीक्षा करना नहीं जानता उसका मन अधिक चंचल हो जाता है। अधिक चंचलता मन को अस्त–व्यस्त बना देती है। इससे स्मृति और एकाग्रता की शक्ति कम होती है। इसलिए धैर्य रखना बहुत जरूरी है। मैं धैर्य रखने का अभ्यास करूँगा। (10 मिनट)
7. महाप्राण ध्वनि के साथ ध्यान सम्पन्न करें। (2 मिनट)

हिम्मत मिली

"ठीक है, मैं अभी आती हूँ। आप लोग घबराइए नहीं।" कहकर मीरा ने फोन रखा और जल्दी से स्कूटी स्टार्ट कर निकल गई। थोड़ी देर बाद एक घर के सामने वह रुकी। घर के अन्दर से अधेड़ उम्र का एक व्यक्ति बाहर आया। जिसके चेहरे पर परेशानी की छाया साफ दिख रही थी। उन्होंने मीरा को अन्दर आने कहा।

मीरा उनके पुत्र किशोर की क्लास टीचर थी। "कल तक तो सब ठीक था मैडम। लेकिन आज जाने क्या हुआ! सुबह देर तक जब किशोर नहीं उठा तो मैं उसके कमरे में गया। कमरे में जाने पर उसे बेहोश पाया। पास में कुछ दवाएँ पड़ी थी। किशोर कोई दवा नहीं खाता था। उसने इन्हें कहीं बाहर से खरीदा था।" किशोर के पिता एक साँस में कह गए।

"जरा मुझे भी दिखाइए कैसी दवाएँ थीं? किशोर अब कैसा है?" मीरा ने चिन्ता जाहिर की। "वह अब होश में आ गया है। डॉक्टर ने दवा दी है। लेकिन वह बहुत डरा हुआ है। इसलिए आपको बुलाया।" किशोर के पिता ने कहा। "मुझे किशोर से मिलना है। उसके पास ले चलिए।" मीरा ने उनसे कहा।

"जी, आइये।" कहकर वे मीरा को किशोर के पास ले गए। अपनी क्लास टीचर को देखते ही किशोर रो पड़ा। मीरा ने जैसे ही दवाओं को देखा। उसका माथा ठनका। ये तो ड्रग्स हैं!! किशोर को कहाँ से मिली? "ये दवाएँ तुम्हारे पास कहाँ से आईं किशोर?" मीरा ने किशोर से पूछा।

किशोर ने डरते हुए बताया कि– "एक दिन क्लास के बाद उसके कुछ साथी मिलकर पास के केमिस्ट की दुकान पर गए थे। जहाँ विशाल ने एक व्यक्ति से यह दवा खरीद कर उसे दी थी और कहा था कि इससे दिमाग तेज होता है। इससे ज्यादा उन दवाओं के बारे में उसे कुछ नहीं पता।" मीरा, विशाल को जानती थी। वह अच्छे लड़को में नहीं था।

मैडम किशोर को समझाते हुए बोली– "किशोर दवा खाने से पाठ याद नहीं होते। पाठ याद होते हैं लगातार पढ़ने से। विशाल जैसे दोस्तों से दूर रहो। अपनी किताबों से पढ़ो। जो समझ में न आए, हम सब से पूछो।" किशोर को अपनी टीचर की बातों से हिम्मत मिली। उसने प्रॉमिस किया कि अब वह ऐसी कोई हरकत नहीं करेगा। खूब मन लगाकर तैयारी करेगा। फिर चाहे जितने भी मार्क्स आएँ। यह सुन मीरा बहुत खुश हुई। किशोर के पिता ने भी संतोष की साँस ली।

अलका 'सोनी'
आसनसोल (पश्चिम बंगाल)

गरमी के दिन

डॉ. फहीम अहमद
सम्भल (उत्तर प्रदेश)

मुझे बहुत अच्छे लगते हैं,
ये गरमी के दिन।
इस मौसम में नाच उठे मन,
ताक धिना धिन–धिन।।

जितना ज्यादा बहे पसीना,
उतना है शरबत।
अलसाए तन–मन को नींबू
पानी दे हरकत।।

प्यास बुझाते ककड़ी खीरा,
खरबूजे के सँग।
मनभावन तरबूज लीचियाँ,
मन में भरे उमंग।।

दिन में दस–दस बार नहाएँ
नहीं डाँटती मम्मी।
कुल्फी, आइसक्रीम प्यार से,
आकर लेती चुम्मी।।

मन भर खेलें खेल कबड्डी,
चाहे कूदें रस्सी।
खेलकूद कर जब थक जाएँ,
करती स्वागत लस्सी।।

धमाचौकड़ी वाले दिन हैं,
किस्सों वाली रातें।
सचमुच गरमी देती सबको,
प्यार भरी सौगातें।।

रखना साफ सफाई

बच्चो! बहुत जरूरी होती,
घर में साफ सफाई।
जहाँ पनपती दिखी गन्दगी,
झट बीमारी आई।

घर, आँगन, गलियाँ, चौबारे
अंग–अंग चमकाओ।
जीवन बने तुम्हारा चन्दन,
निर्मलता अपनाओ।
अपने तन के साथ–साथ तुम,
मन की करो धुलाई।...

स्वच्छ रहोगे तो तन–मन में,
फूल खिलेंगे सारे।
नहीं जला पायेंगे तुमको,
रोगों के अंगारे।
यूँ ही नहीं बड़े–बूढ़ों ने,
अच्छी बात बताई।...

अपने साथ अन्य जीवों का,
ध्यान तुम्हें रखना है।
अच्छे कर्मों के बल पर ही,
फल मीठा चखना है।
बापू जी ने भी भारत को,
सच्ची राह दिखाई।...

धर्मेन्द्र सिंह 'धरम' मैनपुरिया
मैनपुरी (उत्तर प्रदेश)

बालक बना महान

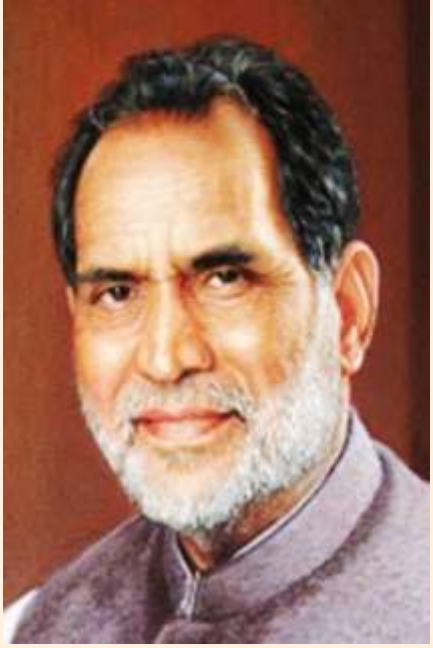

प्रखर समाजवादी राजनेता

चन्द्रशेखर सिंह

चन्द्रशेखर भारत के 8 वें प्रधानमन्त्री बने इनका कार्यकाल छोटा जरूर रहा, लेकिन इनको एक मजबूत प्रधानमन्त्री व इनके कार्यकाल को भारत देश की राजनीति में असरदार कार्य के लिए याद किया जाता है। उस समय देश की हालत बहुत नाजुक दौर से गुजर रही थी, उस वक्त ऐसे लीडर की जरूरत थी, जो निज़ी स्वार्थों से उपर राष्ट्रहित में कार्य करे। चन्द्रशेखर ने इन परिस्थितियों में देश को एक अच्छी राजनीतिक दिशा दी।

जीवन परिचय

चन्द्रशेखर जी का जन्म 1 जुलाई 1927 को उत्तर प्रदेश के ग्राम इब्राहिमपट्टी में हुआ। वे एक कृषक, राजपूत परिवार में जन्मे थे, शायद इसीलिए अपने देश से निःस्वार्थ भावना से जुड़े हुए थे। इनकी अध्ययन में विशेष रुचि थी, स्कूल में वे एक मेधावी छात्र रहे। इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से अपना अध्ययन पूरा करने के बाद इन्होंने राजनीति में प्रवेश किया।

इन्हें छात्र जीवन से ही राजनीति में रुचि थी। उस वक्त देशप्रेम ही जीवन था, हर व्यक्ति बसंती चोला पहने अपने देशप्रेम में लिप्त होता था। चन्द्रशेखर की भाषा शैली अनुपम एवं प्रभावी थी, उसमें इतनी सच्चाई और दृढ़ता थी कि कोई उनकी बात काट नहीं सकता था। पक्ष हो या विपक्ष वे सभी के लिए सम्मानीय एवं सभी को मार्गदर्शन देते थे। चन्द्रशेखर युवाओं के लिए प्रेरणा के प्रतिबिम्ब रहे, इन्होंने युवाओं को जगाने का भरपूर प्रयास किया। उनका मानना था– "युवा को शक्ति मानने वाला ही, देश को एक स्वस्थ प्रगति की तरफ बढ़ाता है क्योंकि उसमें स्वहित के बजाय राष्ट्र के कल्याण का उदात्त भाव होता है।"

राजनैतिक सफ़र

चन्द्रशेखर सिंह का राजनैतिक जीवन एक स्वच्छ दर्पण की तरह है। सर्वप्रथम वे समाजवादी आन्दोलनों से जुड़ें, इन्होंने पिछड़े वर्गों के लोगों के लिए बहुत कार्य किये। दलितों को सामान्य जीवन सुविधाएँ दिलाने के संघर्ष में उन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई पर चन्द्रशेखर जी ने अन्य सामाजिक धर्मों की भावनाओं का भी पूरा ध्यान रखा।

चन्द्रशेखर जी बलिया जिले के समाजवादी दल के सचिव बने तत्पश्चात राज्यस्तर के सचिव बनाये गए। राष्ट्रीय स्तर पर राजनीति में आगमन उत्तर प्रदेश राज्यसभा में प्रवेश करने के बाद हुआ। 1962 में चन्द्रशेखर जी को प्रजा समाजवादी पार्टी के द्वारा राज्यसभा का टिकट दिया गया। यहाँ से इन्होंने उच्च स्तरीय राजनीति का आरम्भ किया। अहम् मुद्दों पर आवाज बुलन्द करना चन्द्रशेखर जी के व्यक्तित्व में शामिल था। इनकी दमदार आवाज, बेबाक बोलने की आदत काफी असरदार थी।

1975 के आपातकाल के दौरान इन्दिरा गाँधी ने कई राजनेताओं को जेल भेजा। उनमें चन्द्रशेखर जी का नाम भी शामिल था। 1977 में उत्तर प्रदेश के बलिया से चन्द्रशेखर को लोकसभा की सीट मिल गई। इसके बाद वे जनता दल के अध्यक्ष बन

गए, इन्होंने दक्षिण भारत के कन्याकुमारी से दिल्ली के राजघाट तक पदयात्रा की। जिसे बाद में 'भारत यात्रा' भी कहा गया। 4260 किलोमीटर की पदयात्रा को 6 जनवरी 1983 से शुरू कर 25 जून 1983 को समाप्त किया गया। भारत यात्रा का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों की समस्याओं पर प्रकाश डालना और सामाजिक असमानताओं और प्रचलित जातिवाद की असमानताओं को दूर करना था। इस दृष्टि से इस यात्रा ने सबका ध्यान आकृष्ट किया।

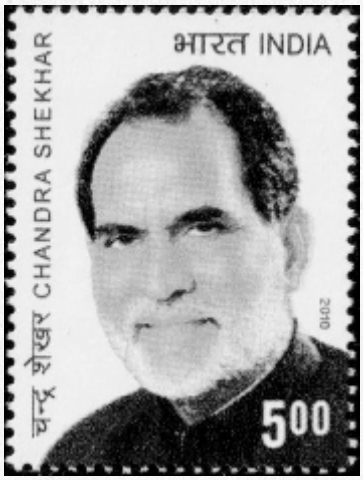

बिन माँगे मिली सुविधा

पूर्व प्रधानमन्त्री चन्द्रशेखर के जीवन से जुड़े कई किस्से मशहूर है। बात साल 2000 की है बांका से सांसद और अटल बिहारी वाजपेयी सरकार में तत्कालीन रेल राज्य मंत्री दिग्विजयसिंह ने चन्द्रशेखर की बलिया से दिल्ली की यात्रा में हो रही असुविधा को देखते हुए रेलवे के नियमों में शिथिल कर नई दिल्ली से गुवाहाटी–दिल्ली राजधानी का स्टोपेज बलिया करवाया था। दिग्विजयसिंह पूर्व प्रधानमन्त्री चन्द्रशेखर को अपना राजनीतिक आदर्श मानते थे। वे जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के छात्र राजनीति में सक्रिय थे। दिग्विजय सिंह को मुख्यधारा की राजनीति में चन्द्रशेखर ही लेकर आए थे। सांसद के तौर पर चन्द्रशेखर का दिल्ली आना जाना लगा रहता था। उस वक्त चन्द्रशेखर बक्सर से दिल्ली और वापस बलिया आने के लिए बक्सर तक की ट्रेन लिया करते थे। उस वक्त बक्सर से बलिया तक की दूरी तय करना भी एक चुनौती भरा काम था।

5 माह तक रहे प्रधानमन्त्री

नवम्बर 1990 में राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के पतन के बाद, राजीव गाँधी की मदद से चन्द्रशेखर 10 नवम्बर 1990 को प्रधानमन्त्री बने। लेकिन कुछ समय बाद ही वी पी सिंह ने जनता दल से अलग समाजवादी पार्टी बना ली। जिसके बाद चन्द्रशेखर को बीजेपी के द्वारा बहुमत मिला। ये बात राजीव गाँधी को अच्छी नहीं लगी और उन्होंने कुछ समय बाद चन्द्रशेखर की सरकार से बहुमत वापस ले लिया। जिसके बाद मार्च 1991 में चन्द्रशेखर की सरकार गिर गई और उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया। इस प्रकार आप करीब पाँच माह के लिए प्रधानमन्त्री पद पर रहे।

वैचारिक व्यक्तित्व

इनके विचारों में बहुत गहराई थी जिसे उन्होंने अपने लेखन के जरिये उजागर किया। उस वक्त विचारों की अभिव्यक्ति सामान्यतः पत्र–पत्रिकाओं के जरिये की जाती थी। यह एक बहुत प्रभावशाली तरीका होता था। इस प्रकार चन्द्रशेखर जी ने भी अपने विचारों को एक उड़ान दी। राजनीति एवं समाज से जुड़े मुद्दों को उन्होंने इसी तरह सबके सामने रखा उनकी शैली इतनी ठोस थी कि उनका विरोध करने का सामर्थ्य किसी में नहीं था। इन्होंने "Young India" नामक समाचार पत्र का सम्पादन किया, इनके समाचार पत्रों ने जनता को जगाने का काम किया। यह बौद्धिक वर्ग में भी प्रिय रहे। वे बेखोफ और निष्पक्ष नेता थे, जिन्होंने कलम को अपना हथियार बनाया और क्रांति का आह्वान किया। आपातकाल के दौरान इन्हें भी जेल जाना पड़ा था जहाँ इन्होंने अपने विचारों और अनुभवों को एक डायरी में संगृहीत किया, जो बाद में "मेरी जेल" के नाम से प्रकाशित की गई। आप "डायनमिक्स ऑफ चेंज" नामक पुस्तिका के रचयिता भी थे, जिसमें इनके विचारों और young India के इनके अनुभवों को भी प्रकाशित किया। इनके लेखन में ऐसा मनोभाव होता था, जो पाठक को शुरु से अन्त तक बाँधे रखता था।

बहुत वक्त बाद भारत को एक ईमानदार और कर्मनिष्ठ हाथों ने सम्भाला था, उनके इन्हीं गुणों के कारण वे निष्पक्ष भाव से प्रेम पाते थे। प्रधानमन्त्री पद से हटने के बाद वे भोड़सी में अपने आश्रम में रहे, इनसे इनकी पार्टी के आलावा विपक्षी भी सलाह करते थे। वे एक लोकप्रिय प्रखर समाजवादी राजनेता थे।

चूहे राजा

बस्ता लेकर चूहे राजा,
बैठे घर के द्वारे।
गौरेया ने पूछा क्या है,
क्यों इतना दुखियारे।

चूहा बोला प्यारी बहना,
नंबर आए अंडा।
मित्रों की बातों में आकर,
खेला गुल्ली डंडा।

पाई पाई जोड़ जोड़कर,
भरते फीस हमारी।
हमने अम्मा बापू के सँग,
की कैसी गद्दारी।

जब जागो तुम तभी सवेरा,
बोली चिड़िया रानी।
आज अभी से शुरू पढ़ाई,
मत करना शैतानी।

नीता अवस्थी
कानपुर (उत्तर प्रदेश)

देहावसान

चन्द्रशेखर जी को बॉन मेरो कैंसर था, तबियत ख़राब होने पर उन्हें 3 मई 2007 को अस्पताल में भर्ती कराया गया था, 8 जुलाई 2007 को दिल्ली में इन्होंने अंतिम साँस ली, उस वक्त वे प्लाज्मा कैंसर से ग्रसित थे, उनकी उम्र 80 साल थी।

1995 में चन्द्रशेखर जी को उत्कृष्ट सांसद के पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। इस पुरस्कार की शुरूआत इसी वर्ष हुई थी, अतः चन्द्रशेखर पहले ऐसे व्यक्ति थे, जिन्हें ये सम्मान प्राप्त हुआ था। इनकी कर्मठता तो प्रभावशाली थी ही, साथ ही यह निर्मल चरित्र के भी धनी थे। एक उच्च पद पर आसीन व्यक्ति सामान्यतः कई तरह का शौकीन होता है पर चन्द्रशेखर बहुत सादगी व संयमित व्यक्ति थे। अपने कर्मो एवं स्वभाव के कारण यह सदैव स्मरणीय रहेंगे।

क्या है 24 X 7

आपने कुछ विज्ञापनों या समाचारों में 24 X 7 लिखा हुआ पढ़ा होगा। आप जानते हैं इसका क्या मतलब है? जैसे कोई हॉस्पीटल या टी.वी. चैनल 24 X 7 से बाएँ देता है अर्थात् वह सेवा दिन के पूरे 24 घंटे और सप्ताह के सातों दिन उपलब्ध है।

'ट्रेन के नीचे' पृष्ठ 7 का शेष....

उठाकर अस्पताल ले जाया गया। वहाँ तक ले जाते देर हो गई और इस बीच शाजिया ने दम तोड़ दिया था। जबकि साबिर अली के दोनों पैर काटने पड़े। रियाज ने इस हादसे में अपने दोनों हाथ और एक पैर गँवा दिया था।

प्रदेश की राजधानी में हुए इस हादसे की खबर सभी प्रमुख अखबारों ने प्रमुखता से प्रकाशित हुई। सिर्फ नौ साल तीन महीने के नन्हे बच्चे रियाज ने हिम्मत कर इस दुर्घटना से बचाने की कोशिश थी। उसने इस प्रयास में अपने दोनों हाथ और एक पैर गँवा दिया था। इस घटना को पढ़कर सब उसकी बहादुरी की तारीफ करने के लिए मजबूर हो गए। उसके नाम को वीरता पुरस्कार के लिए प्रस्तावित कर दिया।

भारतीय बाल कल्याण परिषद नई दिल्ली द्वारा रियाज को वर्ष 2003 के राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार की विशेष कोटि 'संजय चोपड़ा पुरस्कार' के लिए चुना गया। वर्ष 2004 के गणतन्त्र दिवस के अवसर पर रियाज को नई दिल्ली बुलाया गया। जहाँ देश के अन्य चुने हुए बहादुर बच्चों के बीच रियाज व्हील चेयर पर बैठा सबसे अलग दिख रहा था। देश के प्रधानमन्त्री जी ने उसकी बहादुरी की सराहना करते हुए उसे वर्ष 2003 का राष्ट्रीय बाल वीरता पुरस्कार प्रदान किया।

रजनीकान्त शुक्ल
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

रानी लक्ष्मीबाई से बहुत पहले, वेलु नचियार को हिन्दुस्तान की ऐसी पहली महिला क्रान्तिकारी रानी होने का गौरव प्राप्त है जिन्होंने अंग्रेजो के खिलाफ़ स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी थी। ऐसा माना जाता है कि मानव बम का उपयोग सबसे पहले उन्होंने ही किया था। वेलु नचियार रामनाड साम्राज्य के राजा चेल्लामुथू विजयारघुनाथ सेथुपति की एकमात्र संतान थीं। उनका पालन-पोषण बिलकुल राजकुमारों की तरह हुआ था। वेलु का विवाह शिवगंगा के राजा मुथुवादुग्नाथापेरिया उदायियाथेवर से हुआ था। सन 1780 में मैसूर के सुल्तान हैदर अली की सहायता से बनाई गयी सेना के साथ उन्होंने अंग्रेज़ो से लोहा लिया और अंग्रेज़ी 'ईस्ट इंडिया कंपनी' के शिकंजे से अपने राज्य को बहुत ही पराक्रम के साथ छुड़ाया।

राजपूत राजा सवाई जयसिंह द्वितीय द्वारा सन 1734 में निर्मित जयपुर के जन्तर मन्तर में स्थित पाषाण सौर घड़ी विश्वभर में विशालतम है।

विश्व स्वर्ण परिषद् के अनुसार भारतीय महिलाओं के पास आभूषणों के रूप में 24000 मीट्रिक टन सोने का भण्डार है जो विश्व के कुल स्वर्ण भण्डार का 11% है यानी अमेरिका, चीन, जर्मनी और आई एम एफ के कुल स्वर्ण भण्डार से भी अधिक। इसकी तुलना में भारत के रिजर्व बैंक के पास केवल लगभग 743 मीट्रिक टन ही है।

पूरी दुनिया में समुद्र तटों के लिए प्रसिद्ध गोवा क्षेत्रफल के हिसाब से अपने देश का ऐसा सबसे छोटा राज्य है जिसमें न्यूनतम यानी केवल दो ज़िले हैं।

रवि लायटू
बरेली(उत्तर प्रदेश)

मोबाइल पर गेम

सार्थक एक बहुत ही प्यारा बच्चा है और समझदार भी। दस साल की उम्र तक कभी भी उसने मल्टीमीडिया मोबाइल फोन पर कोई गेम नहीं खेला। मम्मी और पापा के फोन को वह हाथ भी नहीं लगाता। उसे अच्छी किताबें पढ़ने का शौक है और कभी–कभी वह टी.वी. पर अपने पसन्दीदा कार्यक्रम भी देखता है।

एक दिन उसने देखा कि मम्मी हाथ में एक लिफाफा लेकर खुशी से झूम रही हैं। मम्मी के पास आकर उसने पूछा– "क्या बात है मम्मी, बहुत खुश हो?" सार्थक को देखकर अचानक मम्मी फिर उदास हो गई और लिफाफा टेबल पर रखकर उसे गले लगा लिया। सार्थक कुछ समझा नहीं।

जब मम्मी कमरे में चली गई तो सार्थक ने लिफाफा उठाया। उसमें मम्मी की जॉब का अपॉइंटमेंट लेटर था। वैसे तो मम्मी कई सालों से इंटरव्यू दे रही थी और उन्हें जॉब भी मिल रही थी लेकिन सार्थक के छोटे होने और उसकी देखभाल के लिए मम्मी ने कभी जॉब ज्वाइन ही नहीं किया पर इस बार पापा के बहुत कहने पर मम्मी ने एक इंटरव्यू दिया था। इस जॉब को पाकर मम्मी का खुश होना बहुत स्वाभाविक था क्योंकि यह मम्मी का ड्रीम जॉब था। उन्हें एक बड़े न्यूज चैनल में न्यूज रीडर के तौर पर अपॉइंटमेंट मिल रहा था। वैसे तो सार्थक चाहता था कि मम्मी को 'वर्क फ्रॉम होम' मिल जाए लेकिन उसे याद आया कि एक बार मम्मी ने बताया था कि बचपन से ही उनका अरमान रहा है कि किसी बड़े चैनल पर न्यूज रीडर के रूप में काम करें ।

सार्थक तुरन्त मम्मी के पास पहुँचा और मम्मी को बधाई देते हुए बोला– "वाह मम्मी! आप यह

जॉब ज्वाइन कर लो।" मम्मी ने कहा– "लेकिन यह तो सोमवार से ही ज्वाइन करना है। तुम्हारे पापा भी बहुत व्यस्त हैं।" तभी मम्मी का फोन बज उठा था। कॉलोनी के कॉर्नर वाले मकान में उनकी खास सहेली रहती थीं। दोनों ने साथ ही अप्लाई किया था। उनका भी सिलेक्शन हो गया था। मम्मी की सहेली का बेटा अक्षय भी सार्थक की कक्षा में पढ़ता था। सार्थक ने कहा– "आप बिलकुल चिन्ता न करो मम्मी। हम दोनों साथ रह लेंगे।"

सार्थक और सार्थक के पापा के हौसला बढ़ाने पर मम्मी जॉब के लिए तैयार हो गई थी। उन्हें इस बात की भी तसल्ली थी कि सार्थक और अक्षय एक–दूसरे के साथ अच्छी तरह पढ़–खेल लेंगे। कभी सार्थक उनके घर चला जाएगा तो कभी अक्षय यहाँ आ जाएगा। मम्मी ने जॉब ज्वाइन कर लिया था। सार्थक अपना ज्यादातर समय कहानियों की किताबें और स्कूल की किताबें पढ़ने में ही बिताता था। अक्षय भी वहाँ आ जाता था। सार्थक के पास जहाँ एक छोटा फोन था जिससे सिर्फ कॉल करने और रिसीव करने का काम हो सकता था, वहीं अक्षय के पास एक स्मार्टफोन था। सार्थक ने देखा कि अक्षय दिनभर स्मार्टफोन पर पबजी खेलता रहता है।

सार्थक ने उसे बहुत मना किया और कहा– "मम्मी–पापा की पीठ पीछे पबजी जैसा खतरनाक खेल खेलना उनकी आँखों में धूल झोंकने जैसा ही है।" सार्थक की बात सुनकर अक्षय ने ठहाका लगाते हुए कहा– "तो क्या हुआ ? हमें भी तो अपना मनोरंजन करने का हक है। तुम भी ट्राई करो। फिर इसे छोड़ नहीं पाओगे।"

सार्थक ने जवाब दिया– "इसीलिए तो ट्राई नहीं करता। हम दोनों की मम्मी ने हमारी बेहतरीन परवरिश के लिए अपने करियर से समझौता किया। पर आज जब हम कुछ समझदार होने लगे हैं तब मोबाइल पर गेम खेलने की लत हमारे भविष्य को चौपट कर देगी और मम्मी–पापा की उम्मीदों पर भी पानी फेर देगी।"

अक्षय ने मुँह बनाते हुए कहा– "अब तुम मुझे उपदेश मत दो। मैं अपने घर पर अकेला रह सकता हूँ। मैं जा रहा हूँ।" सार्थक ने कहा– "हाँ! तुम अकेले रह सकते हो। यह गेम खेलने के कारण तुम तो भूख प्यास भी भूल चुके हो। देखो अपनी हालत।"

फिर आज का अखबार उठाकर सार्थक ने अक्षय के सामने रख दिया और कहा– "देखो यह लत कितनी बुरी है। इस लड़के ने पबजी के लिए पैसे जुटाने के लिए अपने ही अपहरण का नाटक कर लिया।"

सार्थक ने और भी ऐसी ही खबरें बताई। अब अक्षय घबरा गया था। उसने कहा– "दोस्त! क्या करूँ? मुझसे कंट्रोल ही नहीं होता।" सार्थक ने कहा– "स्मार्टफोन ने तुम्हारी आदतें खराब की हैं। तुम देर रात तक पढ़ने के बहाने मोबाइल पर गेम खेलते थे। शायद तुम नहीं जानते कि यह धोखा तुम उनके साथ ही नहीं अपने साथ भी कर रहे हो। अब तुम ऐसा करो– मम्मी से कह दो कि हम दोनों साथ ही रहेंगे। साथ ही पढेंगें और मुझे स्मार्टफोन की जरूरत नहीं है।" सार्थक ने कहना जारी रखा– ''जब भी तुम्हें कॉल करना हो, मेरे फोन से कर लेना। तुम 15 दिन ऐसा करके देखो।"

अक्षय ने ऐसा ही किया। शुरू में उसे यह बहुत मुश्किल लगा। वह अपना पूरा दिन सार्थक के साथ ही बिताता था। धीरे–धीरे उसकी स्मार्टफोन की लत छूट गई थी। उसने अपनी मम्मी से कह दिया था कि उसे इस तरह का बड़ा फोन नहीं चाहिए। बस ऐसा फोन चाहिए जिससे कॉल किया जा सके और रिसीव किया जा सके। अक्षय ने सार्थक को धन्यवाद दिया क्योंकि उसी के सहयोग के कारण वह पबजी जैसे खतरनाक खेल के चंगुल से मुक्त हो सका था।

डॉ. अलका जैन 'आराधना'
जयपुर (राजस्थान)

Cultural Gap

If electricity goes in America they call the power house.In Japan, they test the fuse,But In India, they check neighbour's house, "power gone there too, then ok !"

वर्ग पहेली

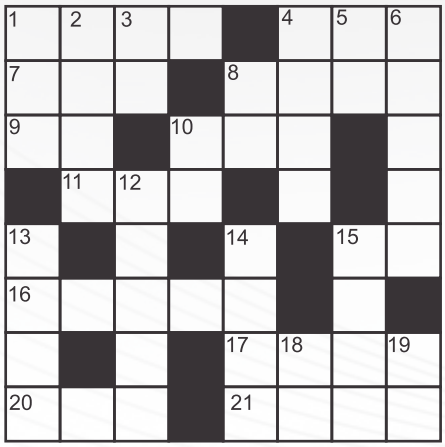

– राधा पालीवाल
कांकरोली (राजस्थान)

बाएँ से दाएँ

1. पवन पुत्र, बजरंग बली, अंजनिपुत्र (4)
4. दोष लगाना/बताना (3)
7. जिसके सिर पर बाल न हो, गंजा (3)
8. एक विशाल विषहीन साँप (4)
9. अमेरिकी अंतरिक्ष एजेन्सी (2)
10. एक सर्प का नाम (3)
11. मानक, आदर्श, प्रतिमान, सेम्पल (अँग्रेजी) (3)
15. मेरा, स्वयं का (2)
16. भारत की राजभाषा का दिवस, 14 सितम्बर (5)
17. मनुष्य से सम्बन्धित भाव, गुण (4)
20. रहम, दया (3)
21. नौ रस, काव्य के भावों की प्रकृति (4)

ऊपर से नीचे :

1. खिसकना, दूर जाना (3)
2. घाटा, हानि (4)
3. फूलों का हार, मोतियों की लड़ी (2)
4. इन दिनों, वर्तमान (4)
5. बीमारी, व्याधि (2)
6. राम द्वारा शिवजी का धनुष तोड़ने के बाद जो ऋषि कुपित हुए (5)
8. धुरी (2)
10. पौधे व वृक्ष का एक मुख्य भाग (2)
12. 1 अप्रैल को यह दिवस मनाते हैं (5)
13. निरर्थक और व्यर्थ की बात (4)
14. आकाश, नभ, व्योम, अंबर (4)
15. जैन तीर्थंकर इनकी भी जन्म जयन्ती है अप्रैल में (4)
18. नया, नवल, नवीन (2)
19. अँग्रेजी में हाँ, एक बैंक का नाम (2)

उत्तर इसी अंक में

कवि रहीम कहते हैं...

कि खीरे का कड़ुवापन दूर करने के लिए उसके ऊपरी सिरे को काटने के बाद नमक लगाकर घिसा जाता है। कड़ुवे मुँह वाले के लिए, कटु वचन बोलने वाले के लिए यही सजा ठीक है।

''खीरा सिर ते काटि के, मलियत लौंन लगाय,
रहिमन करुए मुखन को, चाहिए यही सजाय।''

राजा रानी

एक राजा, एक थी रानी,
रानी थी शैतान की नानी।
करती रहती थी मनमानी,
बात किसी की कभी न मानी।

क्रोध सभी से वो करती थी,
लालच भारी वो रखती थी।
सभी लोग उससे डरते थे,
प्यार नहीं उससे करते थे।
डर से ही आदर करते थे,
पीछे सब निन्दा करते थे।

पर राजा हँसता रहता था,
लोगों के मन में बसता था।
सबको अपना दोस्त समझता,
सबकी बहुत मदद वह करता।
लोग नहीं उससे डरते थे,
प्यार बहुत उससे करते थे।

राजा सबको ही भाते थे,
पीछे से भी गुण गाते थे।
उस रानी सा कभी न बनना,
कभी न लालच गुस्सा करना।

सीताराम गुप्ता
दिल्ली

पर्वत की रानी

मनमोहक पर्यटन–स्थल पर्वत की रानी,
नाम सुना होगा बच्चो, तुमने कौसानी।
हरती आँखों को इसकी मोहक हरियाली,
स्वयं प्रकृति ने बिखराई कितनी खुशहाली।

गर्मी में भी सर्दी सी लगे ऋतु सुहानी,
सच कहा है किसी कवि ने है यह लासानी*।
पर्वत पर मँडराती जब सुन्दर मेघ घटा,
सर्दी में भी लगती है इसकी सुखद छटा।

दूर–दूर तक चमकीले घर ही घर छितरे,
लगें देखने में ऐसे, मोती हों बिखरे।
चीड़–ताड़ के पेड़ घने लगते चित्र जड़े,
आतुर हो नभ छूने को सीना तान खड़े।

पर्वत घाटी, वृक्ष लता, सारे पल–पल में,
रूप बदलते बच्चे सा, इसके आँचल में।
कण–कण पावन है इसका, आओ गमन करें,
दिव्य भूमि है कौसानी, आओ नमन करें।

*लासानी = बेजोड़, अद्वितीय

डॉ. रामनिवास 'मानव'
नारनौल (हरियाणा)

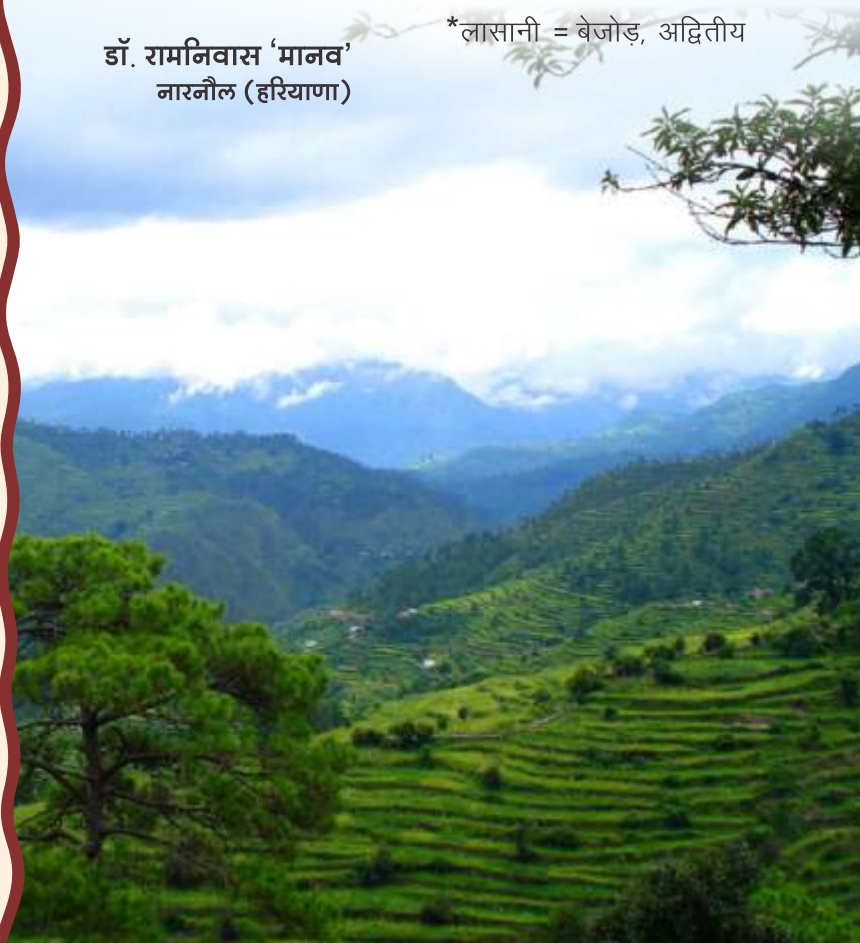

नाटिका

बोल है अनमोल

पात्र : 12–15 वर्षीय तीन दोस्त विनय, अरविन्द और मोहन

अरविन्द : हमारे मुहल्ले में कल रात दो परिवारों के बीच भिड़ंत हो गई। गनीमत थी कि केवल मौखिक संग्राम था। हाथापाई या मारामारी की नौबत नहीं आई।

विनय : कोई बहुत ही बड़ा कारण रहा होगा।

अरविन्द : अरे नहीं भाई! छोटी सी बात थी। एक ने गुस्से में आकर दूसरे को उल्लू कह दिया तो दूसरे ने उसे गधा कह दिया। फिर दोनों पक्ष भिड़ गए।

मोहन : आजकल ऐसा ही होता है! गुस्सा बहुत खराब चीज है, रस्सी का साँप बन जाता है।

विनय : और पड़ोसी लोग क्या कर रहे थे?

अरविन्द : बस दूर से तमाशे का मजा ले रहे थे भैया! एक दो तो वीडियो बना रहे थे।

मोहन : बड़े लोगों द्वारा कही यह बात बिलकुल सही है कि कड़वे बोल जीवन में खटाई का काम करते हैं। जैसे छोटी सी चिनगारी पूरे जंगल को जला सकती है।

अरविन्द : सगे रिश्ते भी गुड़ से गोबर हो जाते हैं।

विनय : यह सच है कि बहुतेरे लोगों के तन में पाचन शक्ति तो है मगर मन में पाचन शक्ति नहीं है। शब्दों में अमृत है तो जहर भी है। जो गुस्सा नहीं पीता है, गुस्सा उसी को पी जाता है। जो गन्दी गाली को भी एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देता है, वही समझदार है।

मोहन : यह बात सच है कि कीचड़ पर कभी भी पत्थर नहीं फेंकना चाहिए।

विनय : मेरे दद्दू का कहना है कि ताली एक हाथ से नहीं बजती है। इसी तरह लड़ाई दोनों ओर से होती है। आग से आग नहीं बुझती है। ठंडे पानी के छींटे मारने से उफनता हुआ दूध तुरन्त जस का तस हो जाता है। इसलिए क्रोध से बचना चाहिए।

अरविन्द : हाँ! बिलकुल सही बताया तुमने। गुस्सैल आदमी का चेहरा अंगारे–सा दिखता है लेकिन शान्तिप्रिय आदमी का चेहरा फूल–सा सुन्दर दिखता है। सबके मन को सोहता और मोहता है।

मोहन : इसके साथ यह भी सच है कि कड़े या कड़वे शब्दों से बने काम बिगड़ जाते हैं

तो मीठे वचन से बिगड़े काम भी बन जाते हैं। निन्दा में खटास है और प्रशंसा में मिठास है।

विनय : हमारे विद्यालय के मुख्य द्वार पर बड़े–बड़े अक्षरों में लिखा है– ''विद्या विनयेन शोभते।''

अरविन्द : हमारे विद्यालय में लिखा हुआ है– ''विद्या ददाति विनयम्।''

मोहन : अरे वाह! मेरी कक्षा में यह दोहा लिखा है–

''तुलसी मीठे वचन ते, सुख उपजत चहुँ ओर।
वशीकरण इक मंत्र है, तज दे वचन कठोर।।''

विनय : तुम क्या विनयशीलता के बारे में कुछ और बता सकते हो?

मोहन : मैं समझता हूँ कि विनयशीलता का अर्थ नम्रता है। धनुष यदि न झुके तो तीर नहीं छूट सकता है। धन से बड़ा मन का बड़प्पन अर्थात् विनम्र वाणी है।

अरविन्द : मैंने एक बाल पत्रिका में यह सूक्ति पढ़ी है– ''व्यक्ति की पहचान उसकी जुबान से होती है।''

मोहन : हाँ! तुम्हारी यह बात भी पूरी तरह सही लग रही है।

विनय : अब तो मेरे भी दिमाग की बत्ती तेज जलने लगी है। बोल दो प्रकार के अर्थात् बढ़िया और घटिया कहलाते हैं। मतलब यह कि मीठे, खट्टे, केले व करेले जैसे बोल होते हैं। दोनों में बाँसुरी और फटे बाँस जैसा अन्तर होता है। कुछ भी अंटसंट बोलना बकने के बराबर है।

अरविन्द : मुझे एक प्यारी शिक्षाप्रद तुकबंदी याद आई–''कभी न बोलो ऊलजुलूल, ऐसा बोलो बरसें फूल।''

मोहन : छोटे शब्दों के भी अच्छे और बुरे परिणाम होते हैं।

विनय : कैसे?

मोहन : जैसे हाँ, ना, वाह, आह, बुद्धिमान, बुद्धू ऐसे ढेरों शब्द हैं, लेकिन एक बात हमेशा ध्यान में धरने लायक हैं वह यह कि इस प्रकार कई टुकड़े होने के बाद भी चन्दन अपनी महक नहीं छोड़ता है उसी प्रकार हमें भी हर परिस्थिति में संयम तथा मर्यादा के साथ बोलना चाहिए ताकि प्यार में तकरार से दरार न होने पाए।

अरविन्द : यह सच है कि बोलने की चूक से भारी नुकसान होता है। स्माइल के साथ बोलने की स्टाइल से यह भी ज्ञात होता है कि जिसके पास नम्रता है उसी की वाणी अमृता है।

मोहन : एक सूक्ति मुझे भी याद आ गई– ''वीणा जैसी प्रिय वाणी ही कल्याणी है।'' मीठे शब्द बीमार के लिए अनार जैसे हैं। मिलनसार होने के संस्कार को सभी नमस्कार करते हैं।

विनय : कहते हैं कि कड़वी भाषा बोलकर लोग शहद भी नहीं बेच सकते हैं। सत्य को भी मीठा होना चाहिए।

मोहन : आज बातें बहुत हो गई। अब चलो, खेलने का वक्त हो गया है।

(तीनों का प्रस्थान)

राजा चौरसिया
कटनी (मध्य प्रदेश)

अभ्यास कार्य : इस नाटिका से तुकान्त शब्दों (Rhyming Word) के 10 जोड़ों को रेखांकित कीजिये।

इको फ्रेंडली होली

प्रकृति का नियम है गिव एंड टेक। देना और लेना, इसी पर जीवन आधारित है। दिया जाता है फिर लिया जाता है। अच्छा देंगे तो अच्छा पाएँगे, यह जानते हुए भी प्राकृतिक चीजों का नुकसान करने से हम सुरक्षित कैसे रह पाएँगे? हम प्रकृति का दोहन कर रहे हैं क्योंकि हमारे भीतर करुणा, मैत्री, अहिंसा का स्रोत सूख रहा है। गलत को गलत जानते हुए भी हम गलत कर रहे हैं और उसके परिणाम से नहीं डर रहे हैं।

बाह्य पर्यावरण के साथ–साथ हमें आन्तरिक पर्यावरण को दूषित होने से बचाना है । अन्दर में जब करुणा का स्रोत सूख जाता है तभी हम प्रकृति को हानि पहुँचाते हैं। जैन दर्शन में ही नहीं विज्ञान ने भी सिद्ध कर दिया जल की एक बूँद में असंख्य जीव होते हैं फिर भी आवश्यकता से अधिक जल का दुरुपयोग कर हम सूक्ष्म जीवों की हिंसा के दोषी बनते हैं इसीलिए अनुशास्ता आचार्य श्री तुलसी ने कहा अणुव्रती बनो। अणुव्रत आचार संहिता में एक नियम है कि मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा, पानी का अपव्यय नहीं करूँगा, हरे वृक्ष नहीं काटूँगा। संकल्प और त्याग की भावना जागृत और विकसित किए बिना केवल जानने मात्र से कुछ नहीं होगा। आज आपसी प्यार, सद्भावना, संस्कार , संस्कृति, जीवन मूल्यों की पहचान, श्रद्धा समर्पण सेवा जाने कहाँ खो गए। बीमारियों के साथ–साथ मन की दूरियाँ भी बढ़ रही है।

होली का त्योहार मन में आनन्द और उत्साह का संचार करता था। लाल गुलाबी गुलाल से रंगे चेहरे ना जाने कहाँ खो गए हैं। उनका स्थान ले लिया है तेज आवाज में बजते डीजे, केमिकल युक्त गुलाल, नकली रंग, होली के हुड़दंग, हानिकारक पदार्थ जिनके प्रयोग से जीवन खतरे में पड़ रहा है। होली के पावन प्रसंग पर आज हम संकल्प करें कि हम होली खेलेंगे पर पानी और केमिकल रंगों से नहीं संगठन, एकता, सद्भाव रूपी गुलाल से, संयम व सादगी से और यही है इको फ्रेंडली होली।

प्रभा सेठिया
अध्यक्ष अणुव्रत समिति, फारबिसगंज

('इको फ्रेंडली होली' विषय पर चयनित आलेख)

आओ पढ़ें : नई किताबें

बीस बाल कहानियों की इस पुस्तक में बच्चों के लिए आस पास के वातावरण की सहज सरल कहानियाँ है। सामान्य घटनाओं से रची नई कहानियों में प्रेरणा व संदेश भी है। सुन्दर आवरण की इस सजिल्द पुस्तक का मुद्रण भी अच्छा है। पात्रानुकूल संवाद एवं परिवेश चित्रण से कहानियाँ सशक्त होकर उभरी है।

पुस्तक का नाम : हरी आँखें **लेखक :** डॉ. शशि गोयल
मूल्य : 325 रुपये **पृष्ठ :** 85 **संस्करण :** 2022
प्रकाशक : केशव बुक्स, दिल्ली

सुन्दर आवरण से सजी 51 बाल कविताओं की इस सचित्र पुस्तक में एक मोहक अंदाज है। सहज–सरल विषयों की विविधता व रोचकता है। सभी त्यौहार, पशु–पक्षी, पेड़–पौधे, परिवार के सदस्य और भी अनेक मजेदार विषयों पर रचित लयबद्ध छोटी सरस कविताओं की यह पुस्तक मनभावन है। शीर्षक के अनुरूप बच्चे इन्हें याद करने व गुनगुनाने की ओर प्रवृत होंगे।

पुस्तक का नाम : गीत गुनगुनाओ **लेखक :** कुसुम अग्रवाल
मूल्य : 149 रुपये **पृष्ठ :** 59 **संस्करण :** 2022
प्रकाशक : नोशन प्रेस, तमिलनाडु (मद्रास)

उधारी की आदत

बच्चो! सभी को प्रायः प्रतिदिन आपकी मनपसन्द चीजें खाने–पीने या खेलने–कूदने या यूँ कहें कि मनोरंजन के लिए अपने मम्मी–पापा से कुछ रुपए मिलते होंगे। कभी–कभी आपके परिवार के अन्य रिश्तेदार भी आपको रुपए देते हैं। आप उन रुपयों से मनपसन्द चीजें तुरन्त खरीद भी लेते हो। सामान्यतः बच्चे खाने की चीजें ही खरीदना पसन्द करते हैं और खाकर आनंदित होते हैं। कुछ बच्चे, इन रुपयों को बचाने का शौक भी रखते हैं। वे इन रुपयों को अपने मम्मी–पापा, दादा–दादी के पास जमा करते हैं और आवश्यकता होने पर उनमें से जब जितने चाहिए होते हैं, ले लेते हैं। कुछ बच्चे ऐसे भी हैं जो अपने रुपए गुल्लक में जमा करते हैं।

आपको ये रुपए मिलते हैं, जिसे पॉकेट मनी कहा जाता है। उनको बचाकर रखना बहुत अच्छी आदत है। इस तरह थोड़ी–थोड़ी बचत करके आपके पास बहुत रुपए जमा हो सकते हैं। जो जरूरत पर आपके काम आवेंगे। ये बातें तो हुईं रुपए मिलने, फिर उन्हें खर्च करने के तरीके और साथ ही साथ उनमें से रुपए बचाने की।

इसके अलावा कुछ बच्चे एक बुरी आदत में पड़ जाते हैं। बच्चो! इस आदत से सदा दूर ही रहना। यह आदत है, उधार लेने की। उधार याने आज या अभी जो चीज खरीदी है, उसके रुपए बाद में दोगे। इसे उधार खरीदना कहते हैं। ऐसा कभी मत करना। ये बहुत बुरी आदत होती है। इससे हमें नुकसान और परेशानी दोनों होती हैं। आपको जो चीज खरीदना है, यदि आपके पास उस समय रुपए नहीं है तो उधार में नहीं खरीदना बल्कि आपके पास जब रुपए हों तभी खरीदना। इससे आप इस उधारी की अनावश्यक परेशानी से बचे रहेंगे। यदि आपने ऐसा नहीं किया और उधार में कोई चीज खरीद ली तो ऐसा भी होता है कि उस समय रुपए देना नहीं पड़ रहे हैं, इसीलिए आप आवश्यकता से अधिक चीजें खरीद लेते हो या खरीदते जाते हो। इस तरह से यह आदत बढ़ती जाती है और उधार के रुपए भी बढ़ते जाते हैं।

फिर ऐसा अवसर आता है कि आपके पास उतने रुपए नहीं होते और जिसने आपको उधार दिया है, वह आपसे बार–बार रुपए माँगता है। यहाँ तक कि आप जहाँ भी उसे मिलते हो वह आपसे रुपए माँगने लगता है। वह यह नहीं सोचता कि आप किसके साथ हो, कहाँ हो? इससे कई बार आप शर्म भी महसूस करते हैं। बुरा भी लगता है।

इस कारण से फिर आप उसके रुपए लौटाने के उपाय खोजने लगते हो। जिसके लिए आप कई बार गलतियाँ भी करने लगते हो। अतः उधारी की आदत से सदा बचना। कोई कितनी भी सुविधाएँ और छूट का लालच देवें, उनकी बातों में नहीं आना। इस सम्बन्ध में मैं आपको एक और महत्त्वपूर्ण सुझाव देना चाहूँगा कि जब भी कोई खरीदने वाली बात आवे तो अपने मम्मी–पापा को बताकर उनके कहे अनुसार ही कोई काम करना।

नरेन्द्र श्रीवास्तव
गाडरवारा (मध्य प्रदेश)

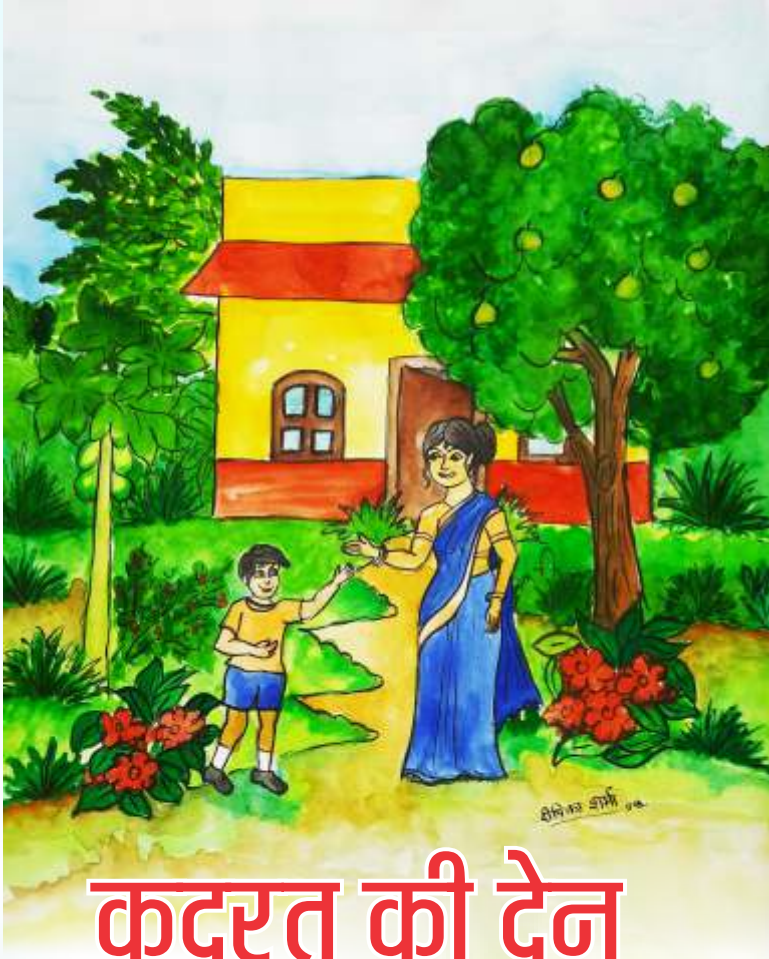

कुदरत की देन

बाहर लगे अशोक के पेड़ पर बैठी कोयल की आवाज से प्रातः जल्दी उठकर अपने घर के बाहर लगाए पौधों को देखना, उन्हें पानी देना, उनके साथ उग आई खरपतवार को साफ करना और फिर चाय बनाकर सबको उठाना, यह प्रिया के सुबह उठकर सर्वप्रथम किए जाने वाले कार्यों का एक हिस्सा थे। उसने घर की छत पर बहुत सारे गमलों में पौधे लगा रखे थे और अपने घर के बाहर भी खाली पड़ी जमीन पर अशोक, बेलपत्र, पपीता, मीठी नीम, गुलाब और ना जाने कौन–कौन से फूलों वाले पौधे लगाकर छोटी सी बगिया बना रखी थी। खाली समय में पौधों के साथ समय बिताना, उन्हें निहारना ही उसके मनोरंजन का प्रमुख साधन था।

उनका 13 वर्षीय बड़ा बेटा वेदांत तो एक बार कह भी चुका था– "ऐसा लगता है मम्मा आप हमसे ज्यादा प्यार इन पौधों से करती हो, तभी तो खाली समय में हमारे साथ खेलने के बदले पौधों के साथ समय बिताती हो।" इस बात पर प्रिया मुस्कुरा देती थी। वह अपने बेटे को अपना पौधों से लगाव कैसे समझाती? बीजों से अंकुर फूटना, नन्हे अंकुरों को बढ़ते हुए देखना, उन पर फूल लगना, फलों वाले पौधों पर फल आना, वास्तव में कितना सुखदाई था यह सब।

ठीक वैसी ही तपस्या थी यह जैसे अपने छोटे बच्चों को संघर्ष करते बड़े होते देखना और उनके सुख में आनन्द अनुभव करना। उसके द्वारा लगाए हुए पौधे भी प्रिया का साथ पाकर ऐसे लहलहा उठते जैसे माँ की गोद में बच्चे अपने को सुरक्षित पाते हैं और कई तरह की अठखेलियाँ करने लगते हैं। मीठा नीम का पौधा काफी बड़ा हो चुका था, अशोक का पेड़ घर की छत से ऊँचा निकल गया था, पपीते में फल आने शुरू हो गए थे और बेलपत्र ने एक छोटे घने पेड़ का रूप ले लिया था।

वैसे तो प्रिया बहुत शान्त स्वभाव की थी, पर पता नहीं क्यों उसे बहुत गुस्सा आ जाता जब भी कोई पड़ोसी या निकट ही स्थित कच्ची बस्ती के लोग उसकी बगिया से छेड़छाड़ करते। सावन में बेलपत्र पर एक भी पत्ती नजर नहीं आती, नन्ही मुन्नी बेटियाँ श्राद्ध दिवसों में सांझी को सजाने के लिए फूल ले जाती, सब्जियों में डालने के लिए महिलाओं द्वारा मीठा नीम तोड़ा जाता, डेंगू में प्लेटलेट्स बढ़ाने के लिए पपीते की पत्तियाँ ले जायी जाती और पपीते के पेड़ पर एक दो दिन में पूरे पके जाने वाले फल उसकी अनुपस्थिति में गायब हो जाते। देखे जाने पर तो दो–चार बार ऐसे लोगों से उसकी झड़प भी हो चुकी थी क्योंकि यह लोग न केवल अपनी आवश्यकता की चीज ले जाते थे बल्कि बगिया के नन्हे पौधों को भी कुचल जाते थे। प्रिया ने अपनी बगिया में चारों तरफ लगी जाली पर

ताला लगाना शुरू कर दिया था पर फिर भी हाल वही था। वह हर समय अपने पौधों को सुरक्षित रखने की तरकीबें सोचती रहती।

एक महीने बाद सावन शुरू होने वाला है, यह याद आते ही प्रिया बेलपत्र और फूलों को लेकर चिंतित हो उठी। बहुत सोचने पर उसने दृढ़ होकर यह निर्णय लिया कि इस बार सावन में सोमवार को कोई अन्य व्यक्ति बेलपत्र और फूल तोड़े, छोटे पौधों को नुकसान पहुँचाए उससे पहले ही वह जल्दी सुबह खुद सारे बेलपत्र और फूल तोड़कर पास ही चौराहे पर बैठे माली काका को दे आएगी जो उसके बेलपत्र और फूलों को बेचने में उसकी मदद करेंगे। प्रिया के मन में आई यह बात शायद बेलपत्र और फूलों के पौधों ने सुन ली थी और अन्य पौधों को भी बता दी थी।

अगले दिन प्रिया ने जब सुबह उठकर पौधों को निहारा तो उसे ऐसा लगा जैसे उसे देखकर कोई भी पौधा नहीं मुस्कुराया। वह अनमनी सी अपने रोज के कामों में लग गई। दो–चार दिन लगातार ऐसा ही होता रहा। प्रिया ने पाया कि उसका बेलपत्र धीरे–धीरे अपने आप अपनी पत्तियाँ गिराता जा रहा है और फूलों वाले पौधे भी बीमार जैसे लग रहे हैं। उसने पौधों पर बहुत ध्यान दिया पर लगभग एक सप्ताह में बेलपत्र का केवल तना ही बचा था और फूलों वाले पौधों में से कई पौधे गल चुके थे। अपनी सूखती बगिया को देख प्रिया के दुःख का ठिकाना न था।

एक दिन प्रिया पौधों को निहारते निहारते खुद को कोसने लगी। उसे अपने आप से घृणा होने लगी। उसे लगा कि उसके बेलपत्र बेचने के निर्णय ने पौधों को ही नष्ट कर दिया है। जब पेड़ पौधों की प्रकृति ही देना है तो वह सिर्फ उन्हें खाद पानी देकर उनकी यह प्रकृति किस प्रकार छीन सकती है। उसने मन ही मन पश्चाताप करते हुए भगवान से प्रार्थना की– "हे भगवान! मुझे माफ कर दीजिए जो मेरे मन में बेलपत्र और फूलों को बेचने का ख्याल आया, मुझे मेरे पौधे लौटा दीजिए। प्लीज।" बेलपत्र का पत्र विहीन तना और गले हुए फूलों के पौधे प्रिया के इस पश्चाताप के साक्षी थे। यह बात भी तुरन्त उस पुरानी बात की तरह सभी पौधों में फैल गई।

आगामी चार–पाँच दिनों में प्रिया अपने सूखते पौधों को देखने की हिम्मत न कर सकी। पर कुछ दिन बाद जब वह हिम्मत बटोर कर बाहर आई तो बेलपत्र अपनी छोटी–छोटी बहुत सारी पत्तियों के साथ मुस्कुराकर जैसे उसका स्वागत कर रहा था। फूलों की कलियाँ पुनः अठखेलियाँ करती नजर आ रही थी। उन्हें देखकर प्रिया खुशी से झूम उठी। उसने ऊपर वाले को इसके लिए बहुत धन्यवाद दिया। सोचने लगी सचमुच पौधों, नदी, धरती, साधु से कौन उनकी प्रकृति छीन सकता है, देना उनका स्वभाव है फिर पता नहीं हम इनसान इस बात को कैसे भूल जाते हैं? यह ख्याल आते ही प्रिया ने पुनः अपनी बगिया की जाली पर लगा ताला हटा दिया। अगली सुबह पुनः कोयल की आवाज प्रिया की बगिया में गूँज रही थी और सभी पौधे उसे देखकर गर्व से इठला रहे थे।

डॉ. ज्योति शर्मा
कोटा (राजस्थान)

रंग भर कर देखो

तालाब के किनारे एक पैर पर एक पक्षी खड़ा है। यह कौन सा पक्षी है? जानने के लिए संकेतानुार खानों में रंग भरिए।

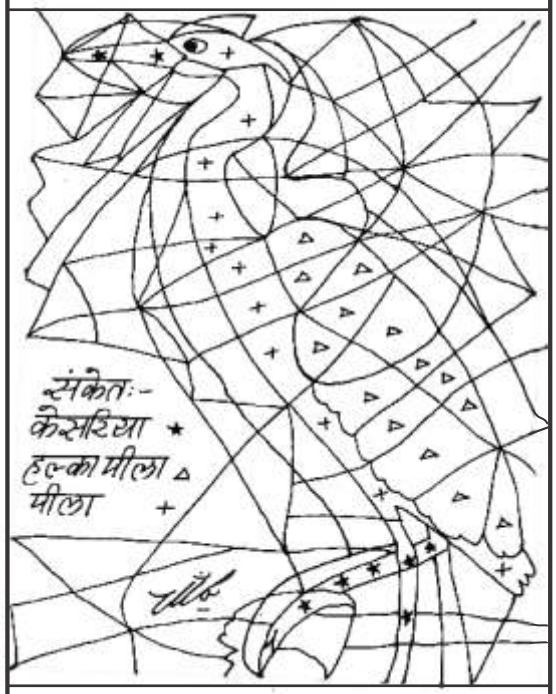

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

बूझो तो जानें

1

ऊ अक्षर पहला है आता,
स्वेटर से है जिसका नाता।
जाड़ों में गर्मी है देती,
भेड़ बाल की करती खेती।

5

धो अक्षर पहले है आता,
भारतीयता से मेरा नाता।
स्त्री-पुरुष दोनों अपनाते,
पहन के मुझ को शान बढ़ाते।

2

ट अक्षर अन्तिम है आता,
को मिलकर पहना है जाता।
जाड़े में यह आता काम,
अब तो जानो इसका नाम।

3

क अक्षर पहला है मेरा,
जो पहने मैं करूँ उजेरा।
ज अंतिम मेरा है होता,
मानव तन की हूँ शोभा।

4

कु से शुरू नाम है आता,
र और ता से इसका नाता।
यह भारत का वेश निराला,
संस्कृति यही बचानेवाला।

डॉ. राकेश चक्र, मुरादाबाद (उत्तर प्रदेश)

उत्तर इसी अंक में

देश प्रेम

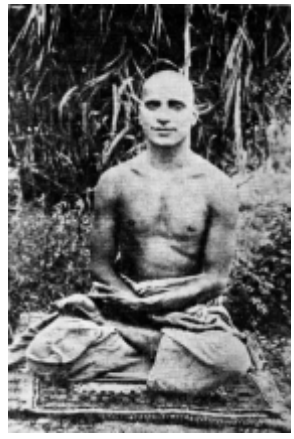

एक बार स्वामी रामतीर्थ जापान की यात्रा पर गए हुए थे। वहाँ उनका खूब आदर–सत्कार हुआ। उन्हें एक विद्यालय में आमंत्रित किया गया । स्वामी जी ने एक बालक से पूछा– " तुम किस धर्म को मानते हो?" "बौद्ध धर्म को।" बालक ने कहा। स्वामी जी ने प्रश्न किया– "बुद्ध के बारे में तुम्हारे क्या विचार हैं ?"

बालक ने उत्तर दिया– "बुद्ध हमारे आराध्य भगवान हैं।" यह कहकर बालक ने मन ही मन बुद्ध का ध्यान किया और देश की परंपरा के अनुसार बुद्ध को प्रणाम किया। तब स्वामी जी ने बालक से कहा– "तुम कनफ्यूशियस के विषय में क्या विचार रखते हो?" बालक ने कहा– "कनफ्यूशियस एक महान संत हैं।"

उसने बुद्ध की तरह कनफ्यूशियस का ध्यान करके उन्हें प्रणाम किया। स्वामी जी ने कहा– "यदि कोई अन्य देश जापान को जीतने के लिए हमला कर दें और उसके सेनापति बुद्ध या कनफ्यूशियस हो तो तुम क्या करोगे ? "यह सुनकर बालक का चेहरा तमतमा उठा और वह क्रोधित स्वर में बोला –" तब मैं अपनी तलवार से बुद्ध का सिर काट लूँगा और कनफ्यूशियस को अपने पैरों तले रौंद दूँगा।"

बालक का उत्तर सुनकर स्वामी रामतीर्थ उस बालक को अपने गले से लगाते हुए बोले– "जिस देश के छात्रों मे ऐसी देशभक्ति हो, वह देश कभी किसी का गुलाम नहीं बन सकता और उसकी उन्नति में कोई बाधा उत्पन्न नहीं कर सकता।"

पुष्पेशकुमार 'पुष्प'
बाढ़ (बिहार)

खेल बढ़ाता मेल, ख

खेल इनसान के जीवन में बहुत महत्त्व रखता है। शायद जब से इनसान ने सोचने–समझने की क्षमता प्राप्त की, तभी से वह कोई न कोई खेल खेलता रहा है। समय के हिसाब से खेलों में परिवर्तन आता है, जैसे पाषाण युग में हथियारों और पत्थरों से खेल खेले जाते रहे होंगे और आज के आधुनिक जीवन में खेलने के अनेक खेल व उपकरण और सुविधाएँ उपलब्ध हैं।

आज परम्परा हो गई है कि किसी भी एक महत्त्वपूर्ण विषय को साल में एक दिन खास तौर पर याद किया जाता है। इसी परम्परा के अनुसार 6 अप्रैल को अंतरराष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसका कारण यह है कि सबका मानना है कि खेल इनसान के जीवन में न केवल स्वास्थ्य के लिए महत्त्वपूर्ण है, बल्कि विभिन्न भाषाओं अथवा अनजान देशों को भी एक करने में खेलों की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसी को ध्यान में रखते हुए सन 2013 में 23 अगस्त को संयुक्त राष्ट्र संघ ने घोषणा की कि 6 अप्रैल को हर वर्ष अंतरराष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाया जाएगा।

बच्चो! तुम्हारे दिमाग में यह बात तो जरूर आ रही होगी कि आखिर 6 अप्रैल ही क्यों? तो इसका उत्तर यह है कि 6 अप्रैल खेलों की दुनिया में एक बहुत महत्त्वपूर्ण तारीख है। तुम्हें तो पता ही होगा कि दुनिया का सबसे बड़ा खेल आयोजन ओलम्पिक है। सदियों पहले होते रहे इस खेल आयोजन को ग्रीस के राजा ने बन्द करा दिया था। दरअसल विलुप्त हो चुके ओलम्पिक खेलों को सन 1896 में ग्रीस के एथेंस नगर में फिर आरम्भ किया गया था। तब इन खेलों की शुरूआत 6 अप्रैल को ही हुई थी। इसलिए अंतरराष्ट्रीय खेल दिवस मनाने के लिए 6 अप्रैल से बढ़िया कोई दिन नहीं हो सकता था।

खेल खेलना शरीर और दिमाग के लिए बहुत आवश्यक है। खेल इनसान के अंदर नेतृत्व क्षमता को उभारता है और जीवन में कभी हार ना मानने की एक स्वस्थ आदत इनसान के अन्दर

विश्व के प्रमुख खेल

खेल खिलाड़ी खेल

विकसित करता है। इसीलिए स्कूलों में बच्चों को खेल खेलने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

खेल और सम्पूर्ण विकास

खेल शान्ति और विकास के उद्देश्यों को बढ़ावा देने के लिए एक प्रभावी और लचीला साधन साबित हुआ है। सामाजिक प्रगति के लिए खेल की भूमिका को सभी ने स्वीकार किया गया है: संयुक्त राष्ट्र ने मनुष्य के विकास और शान्ति की प्राप्ति के लिए खेल के बढ़ते योगदान को पहचाना और माना कि महिलाओं और युवा लोगों के साथ व्यक्तियों और समुदायों के अलावा स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक उन्नति में यह जबरदस्त योगदान देता है

2023 की वैश्विक थीम

विकास और शांति के लिए अंतरराष्ट्रीय खेल दिवस 2023 की वैश्विक थीम "स्कोरिंग फॉर पीपल एंड द प्लैनेट" है। पिछले वर्षों की तरह, यह व्यापक विषय सबके विकास और शान्ति पर खेल के प्रभाव को सामने लाता है।

महिलाओं , लड़कियों, युवाओं, विकलांग व्यक्तियों और अन्य उपेक्षित समूहों को सशक्त बनाने से लेकर स्वास्थ्य, स्थिरता और शिक्षा के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के साथ–साथ शांति और मानवाधिकारों को बढ़ावा देने के लिए खेल समुचित प्रभाव उत्पन्न करता है।

संयुक्त राष्ट्र लंबे समय से खेल की शक्ति को मानता रहा है और खेल के माध्यम से व्यक्तियों समूहों और विभिन्न राष्ट्रों को एकजुट करने के लिए, प्रयास करता रहा है।

अनिल जायसवाल
नई दिल्ली

2023 के प्रमुख खेल आयोजन

15 अप्रैल से 1 मई : स्नूकर वर्ल्ड स्नूकर चैम्पियनशिप , इंग्लैंड में

22–28 मई : टेबल टेनिस विश्व चैंपियनशिप डरबन, दक्षिण अफ्रीका

जुलाई 10 से अगस्त 20 : फुटबॉल (सॉकर) महिला विश्व कप ऑस्ट्रेलिया / न्यूजीलैंड

14–30 जुलाई : स्विमिंग वर्ल्ड एक्वेटिक्स चैंपियनशिप फुकुओका, जापान

5–12 अगस्त : मल्टी–स्पोर्ट्स वर्ल्ड बीच गेम्स बाली, इंडोनेशिया

8 सितम्बर – 28 अक्टूबर : रग्बी विश्व कप (पुरुष) फ्रांस

अक्टूबर–नवम्बर : क्रिकेट विश्व कप (पुरुष), भारत

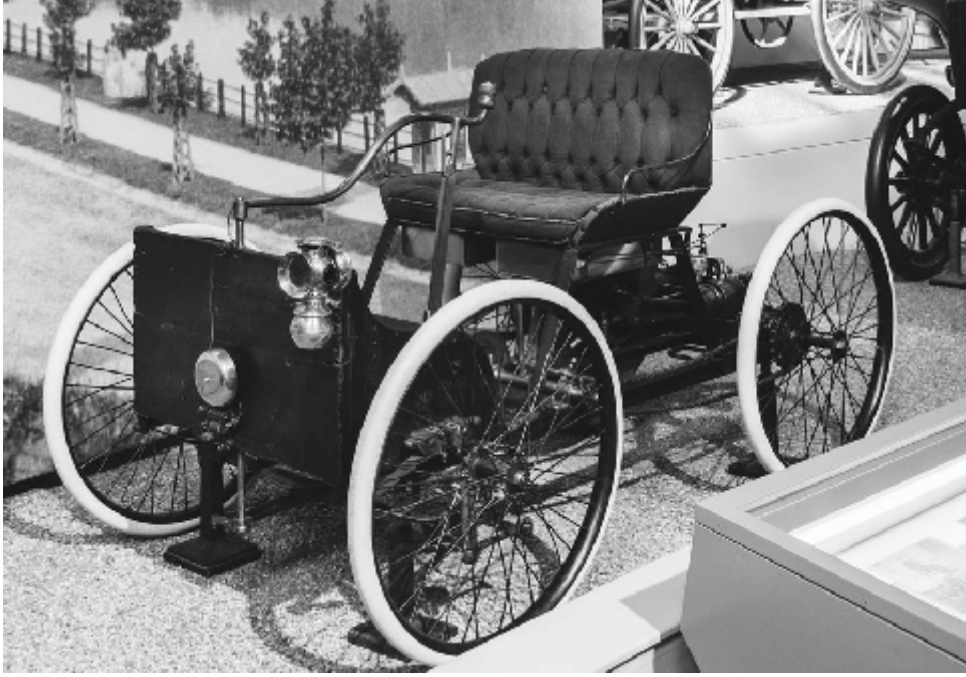

रफ्तार देने वाले हेनरी फोर्ड

हेनरी फोर्ड का जन्म 30 जुलाई सन् 1863 में अमेरिका के मिशिगन प्रान्त की ग्रीन फील्ड टाउनशिप में हुआ था। हेनरी के पिता विलियम फोर्ड एक किसान थे और माँ मेरी फोर्ड एक गृहिणी। फोर्ड का लगाव बचपन से ही मशीनों के प्रति था। अपने पिता के मना करने पर भी फोर्ड रात में चुपचाप मशीनों की मरम्मत का काम किया करते थे। फोर्ड अपने पड़ोसियों के बीच "वाच रिपेयरमैन" के नाम से जाने जाते थे। हेनरी फोर्ड सोलह साल की किशोर उम्र में भी खेतों में काम कर रहे थे जो उन्हें पसन्द नहीं था। खेती का कार्य करते समय वह कल्पनाओं में डूब जाते कि सड़कों और खेतों पर गाड़ियाँ भाग रही हैं। जबकि फोर्ड के पिता चाहते थे कि वह बनी बनाई खेती किसानी में उनका हाथ बटाएँ लेकिन बचपन से ही उनका मशीनों के प्रति अलग ही लगाव था, जिसके चलते वह सोलह साल की उम्र में घर छोड़कर डेट्राइट जा पहुँचे। पर उस समय हेनरी फोर्ड की अपनी कोई पहचान नहीं थी जबकि एडिसन विश्व विख्यात हो चुके थे।

डेट्राइट में वे एडिसन को याद करते रहते और काम करते समय कल्पना करते थे कि यदि कभी एडिसन से उनको बात करने का अवसर मिला तो वह उनसे अपने उस सवाल का जवाब अवश्य पूछेंगे जो उनके मन में अकसर घूमता रहता है। आखिर जब वे सताइस साल के थे तब उनकी यह कामना पूरी हो गई। एक दिन वह एडिसन से रूबरू हुए। उन्होंने उन्हें रोका और बोले– ''सर, मैं आपसे एक प्रश्न पूछना चाहता हूँ।'' फोर्ड की आँखों में उत्साह की चमक देखकर एडिसन रुक गए और मुस्करा कर बोले– ''पूछिए।'' फोर्ड ने पूछा– ''क्या आपको लगता है कि मोटर कारों के लिए पेट्रोल ईंधन का अच्छा स्रोत हो सकता है?'' एडिसन उन दिनों बेहद व्यस्त रहते थे। वे फोर्ड से बोले– ''हाँ बिलकुल हो सकता है।'' और आगे बढ़ गए। एडिसन के इस जवाब ने फोर्ड के उत्साह को चरम पर पहुँचा दिया और वह गाड़ी बनाने में जुट गए।

सन 1909 में उन्होंने टिन लिजी नामक कार बनाई। उन्हें गाड़ियों के निर्माण के समय अनेक बार आलोचनाओं का सामना करना पड़ा, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। आखिरकार वे सफल हुए और ऐसे सफल हुए कि दुनिया भर में उनके संघर्ष और सफलता की मिसाल दी जाने लगी।

उत्साह और लगन ने हेनरी फोर्ड को गुमनाम नाकामी से चमचमाती कामयाबी की मंजिल तक पहुँचा दिया। डेट्राइट पहुँचने के बाद फोर्ड "जेम्स एफ. फ्लावर एंड ब्रदर्स" कंपनी में प्रशिक्षु बन गए। वहाँ पर कुछ महीने काम करने के बाद वह "डेट्राइट ड्राई डोक कंपनी" में बतौर प्रशिक्षु काम करने लगे। हालाँकि, तब उनका वेतन इतना नहीं था लेकिन अपने काम के प्रति रूझान ने उन्हें इस काम से कभी दूर नहीं होने दिया। पैसे की कमी पूरी करने के लिए वे रात में घड़ी सुधारने का काम करने लगे। जिससे वह हर सप्ताह दो डॉलर अधिक कमाते थे।

एक बात और उल्लेखनीय है कि मशीनों के प्रति अपनी रुचि के चलते उन्होंने और भी कई अन्य कम्पनियों में काम किया और जब वह पूरी तरह से सभी बारीकियाँ सीख गए तब नो ग्रीन फील्ड वापस लौट आए। हेनरी फोर्ड ने अलग–अलग तरह के पाँच कारोबार शुरू किए लेकिन उनमें से किसी में भी उनको सफलता नहीं मिली। इतनी बार मिलने वाली असफलता के बाद भी हेनरी ने हार नहीं मानी और वे लगातार प्रयास करते रहे।

फोर्ड ने जल्द ही डिट्रॉइट एडिसन इलेक्ट्रिक कम्पनी में काम करना शुरू कर दिया और साल 1893 में पेट्रोल से चलने वाली पहली गाड़ी बनाई। इस कार की गति तीस मील प्रति घंटा थी। दो साल बाद इन्होंने दूसरी गाड़ी बनानी प्रारंभ की तथा कुछ ही समय में इलेक्ट्रिक कम्पनी की नौकरी छोड़कर डिट्रॉइट ऑटो मोबाइल कम्पनी की स्थापना की। चालीस बरस के होते–होते औरो की कम्पनी छोड़ने के बाद फोर्ड ने रेस में हिस्सा लेने वाली गाड़ियों को बनाने की खुद शुरूआत की। फोर्ड द्वारा बनाई गई गाड़ियाँ रेस ट्रैक पर दौड़ी और इतना ही नहीं उन्होंने जीत भी हासिल की। बस इसके बाद फोर्ड की जिन्दगी पूरी तरह से बदल गई। रेस में हिस्सा लेने वाली कारों की सफलता से फोर्ड का नाम काफी विख्यात हो गया। साल 1903 में हेनरी ने फोर्ड मोटर कम्पनी की स्थापना की। पहले साल फोर्ड मोटर कम्पनी ने दो सिलिंडर तथा आठ अश्वशक्ति वाली दो हजार गाड़ियाँ बनाई। बाजार में फोर्ड की कारों को काफी अच्छी प्रतिक्रिया मिली, जिससे कम्पनी को काफी ज्यादा मुनाफा भी हुआ। दूसरे साल फोर्ड की ऐतिहासिक पाँच हजार कारों की बिक्री हुई जिसने सारे जगत को चौका दिया। इसके बाद उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। फोर्ड इस कम्पनी के अध्यक्ष और मालिक बन गए।

फोर्ड का सिर्फ एक ही मकसद था कि लोगों को ऐसी कार बनाकर देना जो हल्की, तीव्रगामी, दृढ़ किन्तु सस्ती हो जिससे की हर कोई उनकी गाड़ियों को खरीद सके और इन सभी बातों का ध्यान रखते हुए उन्हें एक नई गाड़ी को बनाना था। इसमें सफलता प्राप्त करने के लिए इन्होंने मशीन के अंगों के मानकीकरण, प्रगामी संयोजन, व्यापक बिक्री तथा ऊँची मजदूरी देने के सिद्धांतों को अपनाया। इन सबके दौरान फोर्ड ने रेस में दौड़ने वाली गाड़ियाँ ही नहीं बल्कि खेती के लिए ट्रैक्टर भी बनाए।

सन् 1924 तक इनकी कम्पनी ने बीस लाख गाड़ियाँ, ट्रक और ट्रैक्टर बनाए थे, लेकिन उसके दस साल बाद तक इनके सब कारखानों में निर्मित गाड़ियों की संख्या दो करोड़ से भी आगे तक पहुँच गई। इसे फोर्ड की मेहनत और लगन ही कहेंगे जिसने उनको आज इस मुकाम पर पहुँचाया है। सन् 1947 में हेनरी ने इस संसार को अलविदा कह दिया। लेकिन उनकी कम्पनी फोर्ड आज भी सारे संसार को उच्च तकनीक की बेहतरीन गाड़ियाँ उपलब्ध कराती है। रफ्तार को रंग देने वाले हेनरी फोर्ड को आज भी सारी दुनिया सम्मान से याद करती है।

हरीश चंद्र पांडे
हल्द्वानी (उत्तराखंड)

जरा हँस लो

अध्यापक : मुकेश, बताओ! पृथ्वी और चन्द्रमा में क्या सम्बन्ध है?

मुकेश : जी, बहन–भाई का।

अध्यापक : कैसे?

मुकेश : क्योंकि हम पृथ्वी को माता कहते हैं और चन्द्रमा को मामा।

प्रेरक वचन

यदि शान्ति चाहिए तो लोकप्रियता से बचो।

❖

चरित्र वृक्ष है, प्रतिष्ठा छाया।

❖

किसी की आलोचना मत करो ताकि तुम्हारी भी कोई आलोचना न करे।

❖

कार्य की अधिकता से उकताने वाला व्यक्ति कभी कोई बड़ा कार्य नहीं कर सकता है।

❖

इन्तजार करने वालों को चीजें मिलती तो है, लेकिन सिर्फ वही मिलती हैं, जो संघर्ष करने वाले छोड़ देते हैं।

अब्राहम लिंकन

मेरी प्यारी बिल्ली

अपनी प्यारी बिल्ली को भी
विद्यालय ले जाऊँ मैं,
दुनिया के कुछ तौर–तरीक़े
इसको भी सिखलाऊँ मैं।

क्लास में जाने से पहले हम
कहते हैं– 'मे आई कम इन'
तब ही भीतर जाते हैं जब
टीचर कहती– 'यस, कम इन'।

लेकिन बुद्धू है ये बिल्ली
पहले घर में घुसती है,
फिर जब नजरें मिलती मुझसे
'मैं आऊँ (मियाऊँ)' तब रटती है।

राजेश आहूजा
नई दिल्ली

दोनों चित्रों में आठ अन्तर ढूँढ़िए

उत्तर इसी अंक में

आदत में सुधार

भीखी बंदरिया बड़ी मतलबी थी। उसे जब किसी जानवर से अपना काम कराना होता था तो वह मीठी–मीठी बातें करके उससे अपना काम करा लेती थी। लेकिन जब काम हो जाता तो वह उस जानवर से बात तक नहीं करती थी और उससे अनजान बन जाती थी। वन के सभी जानवर उसकी इस आदत से भली भाँति परिचित थे।

एक दिन भीखी बाजार से अपने घर का सामान ला रही थी। सामान बहुत था। इसलिए वह सामान को घर पहुँचाने के लिए किसी की राह देख रही थी। तभी उसे ढेंचू गधा दिखाई दिया। वह ढेंचू से बोली– "अरे भाई ढेंचू! आओ, जरा यह मेरा थोड़ा सा सामान है। इसे घर तक पहुँचा दो"। बेचारा ढेंचू सीधा और मेहनती था। उसने भीखी का सामान पीठ पर लादा और चल दिया। घर पहुँच कर भीखी ने अपना सामान घर में रखा और घर का दरवाजा बन्द कर लिया। ढेंचू को धन्यवाद तक नहीं दिया।

एक दिन भीखी ने देखा कि उसकी क्यारी में गाजरें पक चुकी हैं। यह देखकर भीखी सोचने लगी कि गाजरों को क्यारी में से किससे निकलवाया जाए। तभी उसको मटकू खरगोश की याद आई। उसने मटकू को अपने घर बुलाया और कहा– "अरे मटकू भाई, मेरी क्यारी में से गाजरें खोद कर निकाल दो।" पहले तो मटकू की इच्छा नहीं हुई। फिर गाजर का नाम सुनकर उसने भीखी की बात मान ली और क्यारी में जाकर मिट्टी में से गाजरें खोदकर निकालने लगा। शाम तक उसने पूरी क्यारी खोदकर गाजर का एक बहुत बड़ा ढ़ेर लगा दिया। लाल–लाल मोटी–मोटी गाजरों को देख कर भीखी बहुत खुश हुई। गाजरों को देख कर मटकू भी उससे कहने लगा– "भीखी, कुछ गाजरें मुझे भी खाने को दे दो"। इस पर भीखी कहने लगी– "अरे नहीं, यह सारी गाजरें तो मैं मंडी में बेच कर आऊँगी। यह मैं किसी को नहीं दूँगी।"

भीखी की यह बात सुनकर मटकू का मुँह लटक गया और वह चला गया। मटकू के जाने के बाद भीखी ने सोचा कि अब गाजरों को मंडी तक पहुँचाने के लिए किसको

बुलाया जाए जिससे वह इन गाजर को मंडी में बेच सके। कुछ सोचकर वह हिन्नू हिरन के पास गई और बोली– "हिन्नू जी, मेरे पास गाजर का ढेर लगा है। तुम मंडी तक उनको पहुँचा दो"। हिन्नू भीखी को अच्छी तरह जानता था। वह बोला– "भीखी मेरे पास टाइम नहीं है। मुझे काम पर जाना है।''

हिन्नू के बाद भीखी लम्बू ऊँट व डबलू हाथी के पास गई। परन्तु सभी ने उसकी आदत को जानते हुए उसका काम करने में अपनी व्यस्तता दिखा दी। अब भीखी परेशान हो गई। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह कैसे गाजरों को मंडी तक पहुँचवाए। इस तरह जानवरों के पास आते–जाते उसे शाम हो गई। वह रुआँसी हो गई। घर आकर वह बिना कुछ खाए ही सो गई।

सुबह भीखी देर से उठी। उसने क्यारी की तरफ देखा तो वहाँ गाजरों का ढेर नहीं था। गाजरें कहाँ गयी? वह सन्न रह गई और सोचने लगी कि उसकी गाजरें कौन उठा ले गया? अभी वह दुःखी मन से सोच ही रही थी कि तभी टमटम घोड़ा वहाँ आ गया। टमटम सब्जी मंडी का मालिक था। वह भीखी से कहने लगा– "सुनो भीखी। लो यह पैसे रख लो।"

"कैसे, पैसे!" भीखी ने आश्चर्य से पूछा। "अरे! तुम्हारी गाजरों के पैसे। शायद तुम्हें मालूम नहीं कि सुबह ही मटकू, हिन्नू, ढेंचू, लम्बू और डबलू सबने मिलकर तुम्हारी गाजरों को मंडी तक पहुँचाया है। यह पैसे उन्हीं गाजरों के हैं"। भीखी बड़ी आश्चर्यचकित हुई और खुशी–खुशी बोली– "यह गाजरों के पैसे हैं! मटकू, ढेंचू आदि ने सचमुच मेरी गाजरों को मंडी तक पहुँचाया है।" "हाँ, हाँ। इन लोगों ने ही तुम्हारी गाजरों को मंडी तक पहुँचाया है"।

यह सुनकर भीखी सोचने लगी कि मटकू, ढेंचू हिन्नू, लम्बू और डबलू कितने अच्छे हैं और वह खुद कितनी स्वार्थी है? लोगों से अपना काम तो करा लेती है। परन्तु किसी का अहसान तक नहीं मानती है। किसी को धन्यवाद तक नहीं देती है। सचमुच वह बहुत खराब है। भीखी को अपनी गलती का अहसास होने लगा। वह टमटम से कहने लगी। "टमटम भाई, सब लोग कहाँ हैं? मैं उनसे माफी माँगना चाहती हूँ।" "हम सब झाड़ियों के पीछे खड़े हैं, भीखी।"

मटकू, ढेंचू, हिन्नू, लम्बू और डबलू एक साथ बोल पड़े। फिर कहने लगे– "भीखी माफी माँगने की कोई जरूरत नहीं है। हमें खुशी है कि तुमने अपनी आदत सुधारने का फैसला कर लिया है।" भीखी ने सहमति में सिर हिलाया और सदा के लिए अपनी आदत को सुधार लिया।

हर प्रसाद रोशन
हल्द्वानी (उत्तराखंड)

प्रत्येक वाक्य में दो–दो पशुओं या पक्षियों के नाम है। एक नाम तो सहज ही दिख रहा है। दूसरा आपको खोजना है।

1) लगता है यह बैल मारेगा यहाँ से भागो!

2) क्या बताऊँ टमटम का घोड़ा भाग गया।

3) हमारा पालतू कुत्ता कमरे में ही बन्द रहता है।

4) जंगल में शेर इधर–उधर देख रहा था।

5) मैना तो ताक में ही थी कि कब मौका मिले ?

6) सर्प ने वला की फुर्ती पाई है।

7) बिल्ली को चाचू हॉकी से डरा रहे थे।

8) मोर से छोटे–छोटे पपी हार गए।

9) देखते–देखते गंगधारा में खच्चर बह गया।

10) मिनी पहले मग रख कर आओ, फिर मछली देखेंगे।

उत्तर इसी अंक में

व्हाट्सएप कहानी

अचानक उन चारों को होटल में बैठा देखकर मोहन हड़बड़ा सा गया। अरे! ये तो मेरे स्कूल के दोस्त है – राजू, किशन, जगदीश और आकाश। ये सब यहाँ, मिलूँ क्या। इन सबसे, अभी नहीं। मोहन पागल है क्या? देख इन सबको वे सभी सूटबूट में है। लगता है कामयाब आदमी बन गए है और तू? तू यहाँ एक छोटे से होटल में एक मामूली सा वेटर। तुझे पहचानेंगे भी नहीं और अगर पहचान भी लिया तो चारों तुझ पर हँसेंगे।

ये हमारे होटल के कस्टमर है और मैं यहाँ का वेटर तो आर्डर तो मुझे ही लेना होगा और खाना भी मुझे ही परोसना होगा। खैर! यह मेरा काम है और पापा कहते थे कि कोई भी मेहनत वाला काम छोटा या शर्मिंदगी वाला नहीं होता।

आज लगभग 15 साल बाद मोहन के स्कूल के चारों दोस्त उसके सामने थे। मोहन ने उनका आर्डर लिया और अपने काम को बखूबी अंजाम देते हुए खाना परोसने लगा। चारों ने उसकी ओर देखा तक नहीं। सभी अपने–अपने मोबाइल फोन पर व्यस्त थे। पिता के आकस्मिक निधन के चलते मोहन अपनी दसवीं की पढ़ाई भी पूरी नहीं कर पाया था। मगर मोहन को लगा था उसके जिगरी दोस्त उसे पहचान जाएँगे लेकिन उन्होंने उसे पहचानने का प्रयास भी नहीं किया। वे चारों खाना खा कर बिल चुका कर चले गये।

मोहन को लगा, उन चारों ने शायद उसे पहचाना नहीं या उसकी गरीबी देखकर जानबूझ कर बात करने की कोशिश नहीं की। उसने एक गहरी लम्बी साँस ली और टेबल साफ करने लगा। वह टिश्यु पेपर उठाकर कचरे में डालने ही वाला था कि उस पर कुछ लिखा हुआ सा दिखा।

अचानक उसकी नजर उस पर लिखे हुए शब्दों पर पड़ी। जिस पर लिखा था– ''अबे! हमें खाना खिला रहा था तो तुझे क्या लगा, तुझे हम पहचानेंगे नहीं? 15 साल क्या अगले जनम बाद भी मिलता तो तुझे पहचान लेते। देख हमने पास ही फैक्ट्री के लिए जगह खरीदी है और अब हमारा इधर आना–जाना लगा ही रहेगा। यह तेरा इस होटल का आखिरी महीना है। दस दिन बाद हमारे फैक्ट्री की कैंटीन तू ही चलायेगा।'' अन्त में तीन मोबाइल नम्बर लिखे थे। यह पढ़कर मोहन की आँखें भर आई। उसने डबडबाई आँखों से आसमान की तरफ देखा और उस पेपर को होंठो से लगाकर करीने से दिल के पास वाली जेब में रख लिया। मेरे दोस्तो! सच्चे दोस्त वही तो होते हैं जो दोस्त की कमजोरी नहीं सिर्फ दोस्ती देखकर ही खुश हो जाते हैं।

सुडोकू

यह अंकों का जापानी खेल है,
इससे बुद्धि का विकास होता है।

सुडोकू खेलना बहुत आसान है। खाली स्थानों को इस प्रकार भरें कि ऊपर से नीचे और बाएँ से दाएँ प्रत्येक पंक्ति एवं प्रत्येक नौ-नौ खानों के वर्ग में 1 से 9 तक अंक केवल एक बार आएँ।

		7	2		6	5		1
4	1							
	5		4	7			2	
	8			9	5	6		7
		9		4			1	
		1	3		2			
7	2		9					6
		3					7	2
9	4		6				8	

उत्तर इसी अंक में

एशिया का सबसे स्वच्छ गाँव मेघालय का मॉलिंनॉन्ग

दोस्तो! साफ सफाई हर किसी को भाती है मगर आलस्य की वजह से जहाँ कुछ लोग इससे दूर भागते हैं, वहीं कुछ लोग अपने आचरण से इसकी प्रेरणा देते हैं। ऐसा ही एक गाँव हमारे देश में है जो स्वच्छता के मामले में एक मिसाल पेश करता है। इस गाँव का नाम मॉलिंनॉन्ग है और ये मेघालय की ईस्ट खासी हिल्स में स्थित है।

बचपन से डालते हैं सफाई की आदत

मेघालय की राजधानी शिलांग से करीब 80 किलोमीटर दूर स्थित है मॉलिन्नॉन्ग गाँव। इसे एशिया के सबसे साफ–सुथरे गाँव का दर्जा प्राप्त है। आओ, जानते हैं आखिर यह एशिया का सबसे साफ–स्वच्छ गाँव कैसे बना? दरअसल, इस गाँव में 4 साल की उम्र से ही बच्चों को साफ–सफाई की शिक्षा दी जाने लगती है। इसलिए वे बचपन से ही स्वच्छता का महत्त्व समझने लगते हैं और गाँव को साफ रखने में मदद करते हैं।

कहते हैं भगवान का बगीचा

इस गाँव की खूबसूरती का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि इसे भगवान का बगीचा कहा जाता है। यह गाँव कई सालों से स्वच्छता के लिए प्रसिद्ध है। 2007 से ही यहाँ के हर घर में टॉयलेट जैसी बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध है। इस गाँव में पेड़ों की जड़ों से ब्रिज बनाए गए हैं। इन ब्रिज की खूबसूरती देखते ही बनती है और ये ट्रेकिंग के लिए भी इस्तेमाल किए जाते हैं।

प्लास्टिक का नहीं होता है इस्तेमाल

इस खूबसूरत गाँव में प्लास्टिक का इस्तेमाल नहीं किया जाता है। गाँव की हर सड़क पर बाँस से बनी टोकरियाँ रखी गई हैं, जिनमें लोग कचरा जमा करते हैं। लोग बाजार से सामान खरीदने जाते हैं तो कपड़ों से बने थैलों का प्रयोग करते हैं। गाँव में किसी का भी प्लास्टिक की थैली ले कर प्रवेश करना और थूकना सख्त मना है। यहाँ के लोग पेड़ों के लिए खाद बनाने के लिए कचरे को एक गड्ढे में डालकर रखते हैं। इससे आर्गेनिक खाद बनती है।

महिला सशक्तीकरण की मिसाल

यह गाँव महिला सशक्तीकरण की मिसाल भी पेश करता है। यहाँ पर बच्चों को माँ का सरनेम मिलता है और पैतृक सम्पत्ति माँ द्वारा घर की सबसे छोटी बेटी को दी जाती है। खासी ट्राइब्स में मातृत्व सत्ता का चलन है, यानी यहाँ पर महिलाओं को पुरुषों से ज्यादा अधिकार प्राप्त होते हैं।

अन्य खास बातें

यह गाँव झरना, ट्रेक, लिविंग रूट ब्रिज, डॉकी नदी के लिए मशहूर है। यहाँ की प्राकृतिक सुन्दरता देखते ही बनती है। इस गाँव में कई रंग–बिरंगें फूलों के गार्डन भी हैं जो यहाँ की खूबसूरती में चार चाँद लगाते हैं।

यहाँ की आबादी बहुत कम है। यहाँ महज 500 लोग रहते हैं। 2003 के पहले तक यहाँ सड़कें नहीं थीं, जिससे कोई सैलानी भी घूमने नहीं आता था। लेकिन, जबसे डिस्कवरी इंडिया मैगजीन ने इसे सबसे क्लीन गाँव का दर्जा दिया, तब यहाँ सड़कें भी बन गईं और घूमने के लिए सैलानी भी पहुँचने लगे। यहाँ की साक्षरता दर 100 प्रतिशत है।

शिखर चन्द जैन
कोलकाता (प. बंगाल)

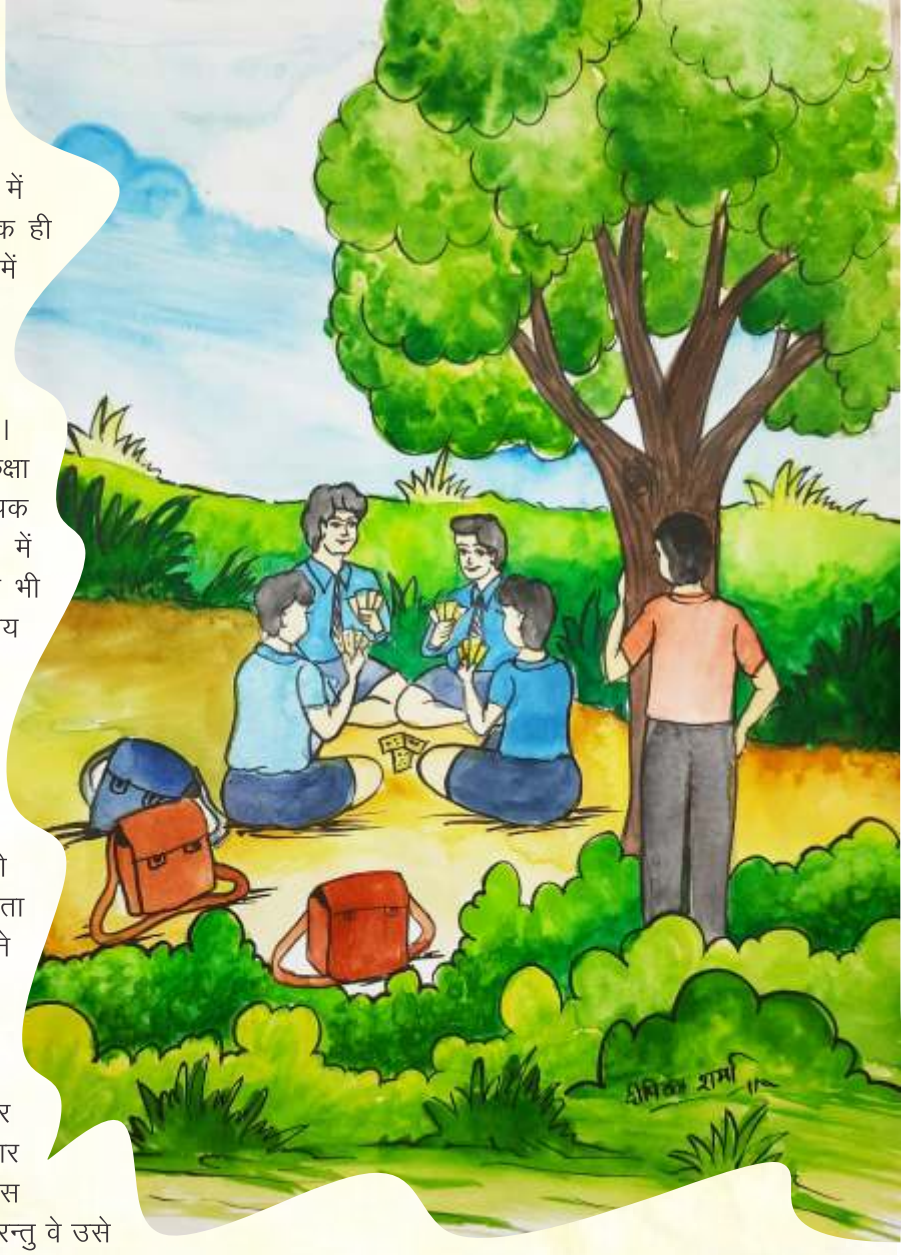

ताश का खेल

सोनू, मोनू, राहुल और रोमी आपस में घनिष्ठ मित्र थे, पढ़ते भी एक ही कक्षा में थे। वैसे तो पढ़ाई में सभी अच्छे थे परन्तु सोनू उन सब से अधिक होशियार था, इसलिए वह अध्यापकों की नजरों में हमेशा रहता था। यदि किन्हीं कारणों से वह कक्षा में न आ पाता तो अध्यापक अगले दिन उससे कक्षा में उपस्थित न होने का कारण भी पूछ ही लेते। घर से विद्यालय अथवा विद्यालय से घर वे चारों साथ–साथ ही आते जाते थे। यदि उन में से कोई एक भी कक्षा में नहीं आता तो पूरी कक्षा ही सूनी सी लगती थी। इसलिए सभी का ध्यान उन पर अधिक रहता था। चारों का स्कूल आने जाने का एक ही रास्ता था।

रास्ते में एक छोटी सी दुकान पड़ती थी इसके आस पास कुछ लोग अकसर ताश खेला करते थे। कई बार स्थानीय लोगों ने उनके इस खेल पर आपत्ति भी जताई परन्तु वे उसे यह कह कर टाल देते कि वे जुआ नहीं बल्कि मनोरंजन व समय बिताने के लिए ताश खेलते हैं। उसके दुष्परिणामों की चिन्ता तो किसी को थी ही नहीं। ऐसी ही चिन्ता से बेखबर वे बच्चे स्कूल आते व जाते हमेशा दुकान के पास लोगों को ताश खेलते या गप्पें लगाते देखते रहते। लोगों को रास्ते में ताश खेलते हुए देखकर वे भी ताश के खेल के बारे में बहुत कुछ जान गए थे।

एक दिन वे चारों स्कूल जा रहे थे। रास्ते में पता चला कि आज स्कूल बन्द रहेगा तो वे चारों बीच में ही रुक गए। समय बिताने का कोई साधन तो चाहिए ही था। चारों नें सोचा कि छुट्टी तो है ही क्यों न समय बिताने के लिए ताश ही खेली जाये जाए? ऐसा सोच कर सोनू ने अपनी जेब खर्च से बचाए हुए पैसों से ताश की एक गड्डी खरीद ली और चारों साथ वाली

झाड़ियों के पीछे बैठकर खेलने लग गए। सचमुच ताश उन्हें समय बिताने का एक सस्ता और बढ़िया साधन लगा। उन्होंने सोचा कि ताश लगातार पढ़ाई तथा खेल के मैदान में पसीना बहाने के बजाय बैठकर खेलने का अच्छा माध्यम है। खेलते–खेलते कब चार बज गए उन्हें पता ही नहीं चला। सभी ने अपने–अपने बस्ते उठाए और चल पड़े अपने घर की ओर।

उसके बाद तो ताश खेलना उनकी आदत ही बन गई। प्रतिदिन स्कूल जाते या आते रास्ते में ताश खेलने बैठ जाते। जिसके कारण कभी घर में देर से पहुँचते तो कभी स्कूल में। कुछ दिन तो किसी ने कोई ध्यान नहीं दिया परन्तु जब उनका यह रोज का नियम बन गया तो कक्षा अध्यापक ने उन्हें समय पर विद्यालय आने की हिदायत दे डाली। उसके बाद कुछ दिन तो सब ठीक रहा परन्तु बाद में फिर उसी रास्ते पर चल पड़े।

कुछ दिनों बाद कक्षा अध्यापक ने पाया कि वे चारों फिर भी पहले की तरह ही देरी से आने लगे हैं। एक–दो दिन देखने के बाद उन्होंने उनके देरी से आने के कारण जानने की कोशिश की। एक दिन अध्यापक महोदय उनके आने जाने के रास्ते में पड़ने वाली दुकान की तरफ निकल गए और एक तरफ छुपकर उनके आने की प्रतीक्षा करने लगे। अन्य विद्यार्थियों के कुछ देर बाद वे चारों भी आते हुए दिखाई दिए। परन्तु स्कूल जाने के बजाय वे चारों झाड़ियों के झुरमुट में बैठकर ताश खेलने लग गए। कुछ देर खेलने के बाद राहुल ने ताश की गड्डी अपने बस्ते में छुपा ली और चारों स्कूल के लिए रवाना हुए।

मॉर्निंग असेम्बली खत्म होने को थी तो वे भी स्कूल में पहुँचे तथा चुपके से कक्षा में चले गए। तब तक अध्यापक कक्षा में नहीं पहुँचे थे। उन्होंने सोचा कि चलो आज तो बच गए बाकी फिर देखेंगे। उसी समय कक्षा अध्यापक भी आ पहुँचे। उन्होंने उन चारों को चुपके से आते हुए तो देख लिया था परन्तु उस समय कुछ नहीं बोले।

अध्यापक महोदय पाठ जल्दी समाप्त करने के बाद भी युवाओं में पनप रही बुरी आदतों पर बोलने लगे। अध्यापक महोदय की बातें सभी विद्यार्थी बड़े ध्यान से सुन रहे थे परन्तु राहुल, रोमी, सोनू और मोनू को लगा कि शायद अध्यापक महोदय को उनकी हरकतों का पता चल गया हो जिससे वे चारों अपने को शर्मिंदा महसूस कर रहे थे। उनकी शर्मिंदगी को अध्यापक महोदय तो ताड़ गए थे साथ ही आसपास बैठे विद्यार्थियों ने भी उनकी शर्मिंदगी महसूस कर ली थी। आखिर में अध्यापक महोदय ने किसी का नाम लिए बिना सुबह वाली घटना सुना दी।

जब सभी विद्यार्थी यह जाने की इच्छा से इधर उधर देखने लगे तो सोनू, मोनू, राहुल व रोमी के चेहरों पर उड़ती हुई हवाइयाँ सभी ने ताड़ ली थी। चारों को लगा कि इससे पहले अध्यापक महोदय नाम पुकार कर खड़ा करें राहुल ने अपने बस्ते से ताश की गड्डी निकाली और अध्यापक महोदय को देते हुए उनके पाँव पर गिर पड़ा और सारी कहानी सुनाते हुए भविष्य में कभी भी ताश व जुआ आदि न खेलने का प्रण करने लगा। सोनू, मोनू व रोमी सिर झुकाए साथ खड़े थे।

अध्यापक महोदय ने राहुल को प्रताड़ित करने वह डाँटने की बजाय उसकी हिम्मत की प्रशंसा करते हुए कहा कि यदि कक्षा में कोई हिम्मतवाला विद्यार्थी हैं तो वह राहुल ही है। आप जानते हैं कि सोनू, मोनू, राहुल व रोमी कक्षा के सबसे मेधावी व परिश्रमी विद्यार्थी रहे है परन्तु कुछ लोगों को देखते हुए ये भी गलत रास्ते चल पड़े थे। मगर शीघ्र ही इन्होंने अनुभव किया कि ये क्या कर रहे हैं?

अध्यापक जी ने आगे कहा कि यदि सुबह का भुला शाम को घर वापस आ जाए तो उसे भुला हुआ नहीं कहते। ऐसा ही आज की कक्षा में इन चारों ने अपनी भूल को स्वीकार करते हुए किया इस सबके लिए बहुत ही हिम्मत की जरूरत होती है। मैं इन चारों को बधाई देता हूँ, इन्होंने न केवल इस बुरी लत को छोड़ने की कसम खाई है बल्कि बाकी बच्चों को भी ऐसे व्यसनों से दूर रहने का संदेश भी दे गए। अध्यापक महोदय कुछ और बोलते तब तक कक्षा समाप्ति की घंटी बज चुकी थी।

हरदेव सिंह धीमान
बरोली धनावली (हिमाचल प्रदेश)

दस सवाल दस जवाब

(1) इन नृत्य मुद्राओं के आधार पर नृत्य का नाम बताओ।
(2) भारत का प्राचीनतम नृत्य कौनसा है?
(3) बिहू किस राज्य का नृत्य है?
(4) भगवान शिव के नृत्य रूप को क्या कहा जाता है?
(5) किस व्यक्ति को आधुनिक भारत में नृत्य का जनक कहा जाता है?
(6) लाहो किस राज्य का प्रसिद्ध नृत्य है?
(7) 'सत्यमेव जयते' वाक्य किस ग्रंथ से लिया गया है?
(8) किस त्यौहार में नाव की दौड़ की जाती है?
(9) मधुबनी लोक कला किस राज्य में लोकप्रिय है?
(10) प्रसिद्ध संगीतज्ञ तानसेन किस राजा के दरबार में थे?

उत्तर इसी अंक में

- (दो बच्चे आपस में बातें कर रहे थे)
  पहला : कल मैंने एक हाथी की सूंड तोड़ दी, एक जिराफ की गरदन मोड़ दी और एक शेर के दाँत उखाड़ दिए।
  दूसरा : फिर क्या हुआ ?
  पहला : फिर होना क्या था, खिलौने के दुकानदार ने मुझे दुकान से बाहर निकाल दिया।

- बेटा : माँ मैं पास हो गया पर टीचरजी फेल हो गई।
  माँ : कैसे बेटा?
  बेटा : माँ पिछले साल टीचरजी जिस क्लास में बैठती थी, इस साल भी उसी क्लास में है।

विशेष – बाल पाठक भी चुटकुले भेज सकते हैं।

पत्र

प्रिय पुत्र,

आशीर्वाद! मैं हैदराबाद आई हुई थी। यहाँ मुझे रामानुज मंदिर जाने का अवसर प्राप्त हुआ। वहाँ जाकर अद्‌भुत आनन्द का अनुभव हुआ। आज मैं तुम्हारे साथ अपनी इस यात्रा का अनुभव साझा करना चाह रही हूँ। कभी भी अवसर मिले तो इस मन्दिर के दर्शन अवश्य करना।

यह मन्दिर भारत के महान संत और समाज सुधारक रामानुजाचार्य की स्मृति में बनाया गया है। इसका उद्‌घाटन प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने 5 फरवरी 2022 को किया था। यह मन्दिर शमशाबाद की 45 एकड़ भूमि में स्थापित है। यहाँ रामानुजाचार्य जी की 216 फीट ऊँची प्रतिमा स्थापित की गई है जिसे "स्टैच्यू ऑफ इक्वेलिटी" नाम दिया गया है। यह मूर्ति सोना, चाँदी, तांबा, पीतल, और जस्ते को मिलाकर बनाई गई है। इस मूर्ति के अतिरिक्त एक और मूर्ति गर्भ गृह में स्थापित की गई है जो 120 किलो सोने से निर्मित की गई है। यह मूर्ति रामानुजाचार्य के 120 सालों की जीवन यात्रा की स्मृति को समर्पित है।

216 फीट की इस मूर्ति को बनाने में कारीगरों को 18 महीने का समय लगा। इसमें प्रतिमा की ऊँचाई 108 है और प्रतिमा में लगे त्रिदंडम की ऊँचाई 138 फीट है। इस प्रतिमा में 5 कमल पँखुड़िया, 27 पद्‌म पीठम, 36 हाथी और प्रतिमा तक पहुँचने के लिए 108 सीढ़ियाँ बनी हुई हैं। इस मूर्ति के अतिरिक्त 108 मंदिर भी बनाए गए हैं जिनकी चित्रकारी ऐसी है कि आँखें चमत्कृत रह जाती हैं।

इस महान संत रामानुजाचार्य का जन्म 1017 में तमिलनाडु के श्रीपेरंबदूर में हुआ था। वह पहले संत थे जिन्होंने समानता का संदेश दिया था। इसके लिए उन्होंने पूरे देश का भ्रमण भी किया था। उन्होंने भारत भर में घूम कर वेदांत और वैष्णव धर्म का प्रचार भी किया। इस दौरान उन्होंने श्रीभाष्यम् और वेदान्त संग्रह जैसे ग्रंथों की रचना की थी। उनकी शिष्य परम्परा में गुरु रामानंद हुए, जिनके शिष्य कबीर थे। 120 वर्ष की आयु में उन्होंने अपना शरीर त्यागा।

पुत्र! मैं शाम के समय वहाँ पहुँची। मनोरम दृश्य था। मुख्य मंदिर के साथ–साथ सारे के सारे 108 मंदिर बिजली की झालरों से जगमगा रहे थे। हर एक मंदिर की सजा अलग थी। वहाँ प्रतिमा के ठीक सामने एक स्तंभ है। जिसके शीर्ष पर कमल बना हुआ है। 8:00 बजे वहाँ लाइट एंड साउंड का कार्यक्रम होता है। जिसमें उस स्तम्भ के ऊपर स्थापित कमल से मूर्ति निकलती है और स्तंभ के चारों ओर बने हाथियों से जल गिरता है और इन सब पर अलग–अलग रंगों की लाइट पड़ती है। जो पूरे परिवेश को बहुत ही सुन्दर मनभावन बना देती है जिसे देखने के लिए भीड़ उमड़ती है।

इस यात्रा की सुखद स्मृतियाँ के साथ मैं वापस आई हूँ और चाहती हूँ कि तुम सब भी यहाँ दर्शन करने अवश्य आओ। ढेर सारे आशीर्वाद के साथ,

तुम्हारी माँ

नीलम राकेश
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

स्कूल की रौनक

देखते–देखते स्कूल को बन्द हुए दो साल हो गए थे। जब से कोरोना आया था माता–पिता ने बच्चों को स्कूल भेजना बन्द कर दिया। सरकार भी किसी तरह का खतरा मोल नहीं लेना नहीं चाहती थी। सच भी है जान है तो जहान है, स्कूल के गलियारे, क्लास, प्ले ग्राउंड सब सुनसान पड़े थे। इतने दिनों में कोई झाँकने भी नहीं आया था, कभी–कभार हेड सर और हेड मैम आती थी। उनके चेहरे पर एक अजीब सी उदासी और निराशा रहती थी। वो करते भी तो क्या? सालों से काम कर रहे ड्राइवर भैया, दाई जी के घरों के चूल्हे उनकी वजह से जल रहे थे पर मजबूरी में उन्हें भी निकालना पड़ा।

''धप्प'' तभी दूर से एक बॉल आकर कक्षा छः के दरवाजे से टकराई, ये आवाज सबसे पहले डस्टर ने सुनी। डस्टर जिसका काम था ब्लैक बोर्ड को साफ करना। ब्लैक बोर्ड और डस्टर में पहले अकसर लड़ाई हो जाती थी– ''तेरे काले मुँह को साफ करने के चक्कर में मेरा शरीर भी गन्दा हो जाता है।'' तब ब्लैक बोर्ड गन्दा सा मुँह बनाकर कहता– ''मेरी क्या गलती है? ये चॉक है न, इसके चक्कर में मैं भी गन्दा होता हूँ और टीचर्स के हाथ और कपड़े भी।'' इस बात का कितना बुरा माना था चॉक ने।

"पहले की बात और थी अब तो मेरी भी नई वैरायटी आ गई है, मैं इतना गन्दा नहीं करती हूँ। ये सब बातें तो मेरे बाबा और पापा के जमाने की है।" वक्त बदला और वक्त के साथ चीजें भी ब्लैक बोर्ड की जगह वाइट बोर्ड ने ले ली और चॉक की जगह पेन ने।'' पर डस्टर आज भी मुँह पोंछ रहा था। आज दूसरों का मुँह पोछने वाला खुद ही गन्दा पड़ा था। धूल की एक मोटी चादर उसके ऊपर भी पड़ी थी। डस्टर ने अपने सिर को हिलाया और अपने माथे की धूल हटाने का प्रयास किया– "कुर्सी दीदी! आपने कोई आवाज सुनी?" कुर्सी दीदी की सभी बहुत इज्जत करते थे। आखिर उस पर टीचर्स बैठते थे, उस पर बैठकर न जाने उन्होंने कितनी ज्ञान की बातें बच्चों की सिखाई थी।

"आवाज तो हमने भी सुनी थी।" बेंच, डेस्क, पर्दे, पंखे सभी एक साथ बोले– "क्या स्कूल खुल गए, बच्चे आ गए। फिर इतना सन्नाटा क्यों है? कितने दिन हो गए बच्चों की आवाज सुने हुए।'' "तभी मेज पर पड़े लकड़ी के स्केल ने कहा– "क्या तुम भी बच्चों का इन्तज़ार कर रही हो। तुम्हारी वजह से मेरी तो पीठ ही अकड़ जाती थी, जब देखो तब कोई न कोई टीचर मेरी पीठ पर तुमको बजाता ही रहता था। अब

तो गनीमत है बच्चों को डाँट कर ही छोड़ दिया जाता है पर मेरी नानी बताती थी, उनके समय में सड़ाक–सड़ाक मारते थे। बच्चों की पीठ लाल हो जाती थी और बच्चे उफ्फ भी नहीं करते थे।"

पंखा बड़ी देर से सबकी बातें सुन रहा था, वह थोड़ा ठंडे दिमाग वाला था, दिनभर चलते–चलते वह भी थक जाता था। एक रविवार का ही दिन होता था जब उसे आराम मिलता था पर अब तो हर दिन रविवार की ही तरह हो गया था। मुँह पर जाले लग गए थे और चिड़ियों ने उसके ऊपर घोंसलें बना लिए थे। दिन भर गन्दगी। पहले मजाल थी कि धूल का एक कण भी उसके शरीर पर रहता। बच्चों की कमी तो उसे भी बहुत खल रही थी, गेम्स पीरियड के बाद बच्चे पागलों की तरह क्लास रूम की तरफ भागते थे। ''वो अक्षय याद है आप सबको कितना शरारती था, कितनी बेदर्दी से हवा तेज पाने के लिए मेरे कान उमेठ देता था। एक बार योगा क्लास के समय उसने हर्ष का जूता उछालकर मुझ पर चढ़ा दिया था, कितना गुस्सा आया था पर बच्चे अक्षय की इस हरकत को देख खिलखिला कर हँस पड़े थे, कहाँ गए वो दिन, न वह बच्चों की खिलखिलाहट थी और न ही उनकी मासूम शैतानियाँ।"

पंखा कहते–कहते उदास हो गया। एक दिन बड़ी मैम ने सितार, ढोलक और तबला भी इसी कमरे में रख दिये थे। ''दीदी आपसे कभी मुलाकात तो नहीं हो पाती पर प्रार्थना के समय और ऐच्छिक पीरियड के समय आपकी सुमुधर आवाज सुनकर मन झूम जाता था।"

पंखे ने बड़ी गम्भीरता से कहा, सितार इन सब में सबसे बड़ा था, स्कूल में वाद्ययंत्रों में वही सबसे पहले आया था, उसके चेहरे पर चिन्ता के भाव उभर आये। "आप सबसे मिलकर बहुत अच्छा लगा, सच कह रहे आप सब यह सन्नाटा, यह वीरानी अब अच्छी नहीं लगती वे खिलखिलाते चेहरे बहुत याद आते हैं। रोज प्रार्थना हो या फिर वार्षिक उत्सव, हमारे साथ के बिना कोई कार्यक्रम नहीं होता था पर आज देखिये!"

सितार ने गहरी साँस ली, बेंच और सीट दोनों जुड़वा बहनें थी, बच्चों की शरारतों से वो तंग आ जाती थी, पर आज वह भी बहुत दुःखी थी। "आप सबको निकुंज याद है, जब देखो तब हमारी टाँगें पकड़कर खींच देता था। ये कोई बात हुई भला, वह रचना तो रोज ही अपनी सब्जी मेरे ऊपर गिरा देती थी और अमित का पानी गिराए बिना दिन पूरा नहीं होता था पर सच कहूँ जो भी हो बच्चों के बिना अच्छा नहीं लगता।" कुर्सी दीदी ने आँखें बन्द की और कहा– '"आप सभी लोग आँखें बन्द करके भगवान से प्रार्थना कीजिए कि सब पहले की तरह हो जाये और स्कूल की रौनक वापस आ जाये।"

डॉ रंजना जायसवाल
मिर्जापुर (उत्तर प्रदेश)

चित्र पहेली

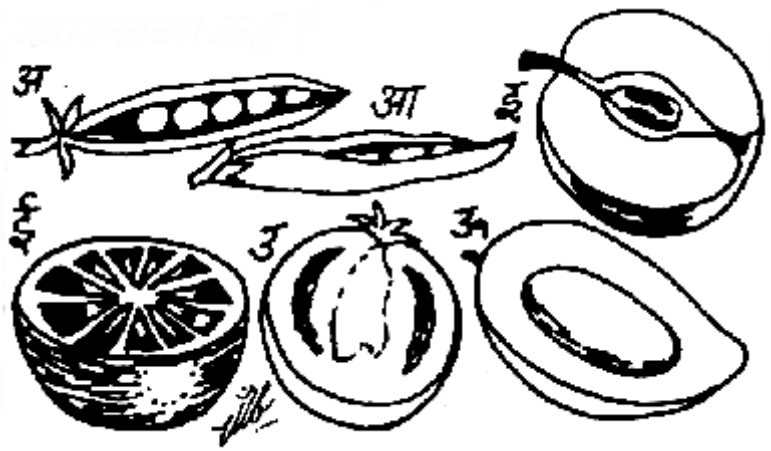

यहाँ दिए गए चित्र में फल व सब्जी के कटे हुए भाग दिखाए गए हैं। आप इन्हें पहचानिए।

उत्तर इसी अंक में

चाँद मोहम्मद घोसी, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

पढ़ो और जानो

इन प्रश्नों के उत्तर इसी अंक में हैं, आपको उन्हें ढूँढ़ना है।

1. हेनरी फोर्ड के जीवन से क्या शिक्षा मिलती है?
2. 'पर्वत की रानी' कविता किस स्थान के बारे में है?
3. किशोर की तबियत क्यों बिगड़ गई थी?
4. चन्द्रशेखर ने कितने कि.मी. पदयात्रा की ?
5. जयपुर का जन्तर–मन्तर किस राजा ने बनवाया था?
6. अक्षय के स्वभाव में क्या बदलाव आया ?
7. बन्दरिया भीखी की कौन सी आदत बुरी थी ?
8. एशिया का सबसे स्वच्छ गाँव कौन सा है?
9. स्टेच्यू ऑफ इक्वेलिटी किस शहर में है?
10. ज्योति बा फुले ने किस संस्था की स्थापना की?

उत्तरमाला

दस सवाल : दस जवाब

(1) (अ) कुचिपुड़ी (ब) डांडिया (गरबा) (स) भंगड़ा (द) घूमर (2) भरतनाट्यम (3) असम (4) नटराज (5) उदय शंकर (6) मेघालय (7) मुंडक उपनिषद (8) ओणम (9) बिहार (10) अकबर

अन्तर ढूँढ़िए

(1) छाते का रंग अलग (2) नाव में लगे झंडे का आकार बड़ा (3) मधुमक्खी गायब (4) फुटबॉल का रंग अलग (5) मछली अतिरिक्त (6) सूरज गायब (7) बतख अतिरिक्त (8) पक्षी का आकार छोटा

दिमागी कसरत

1– बैल और गाय 2– ऊँट और घोड़ा 3– कुत्ता और बन्दर 4– शेर और खरहा 5– मैना और तोता 6– सर्प और नेवला 7– बिल्ली और चूहा 8– मोर और पपीहा 9– गधा और खच्चर 10– मगर और मछली

बूझो तो जानें

(1) ऊन (2) कोट (3) कमीज (4) कुर्ता (5) धोती

चित्र पहेली

(अ) मटर (आ) सेम (इ) सेब (ई) संतरा (उ) टमाटर (ऊ) आम

वर्ग पहेली

1 ह	2 नु	3 मा	न		4 आ	5 रो	6 प
7 ट	क	ला		8 अ	ज	ग	र
9 ना	सा		10 त	क्ष	क		शु
	11 न	12 मू	ना		ल		रा
13 वा		र्ख		14 आ		15 म	म
16 हि	न्दी	दि	व	स		हा	
या		व		17 मा	18 न	वी	19 य
20 त	र	स		21 न	व	र	स

सुडोकू

3	9	7	2	8	6	5	4	1
4	1	2	5	3	9	7	6	8
8	5	6	4	7	1	3	2	9
2	8	4	1	9	5	6	3	7
6	3	9	7	4	8	2	1	5
5	7	1	3	6	2	8	9	4
7	2	8	9	1	3	4	5	6
1	6	3	8	5	4	9	7	2
9	4	5	6	2	7	1	8	3

आलिया चौहान, कक्षा 3, बीकानेर

नन्हा पौधा

मिट्टी में यह समाकर,
जड़ों को यह फैलाकर,
जन्मा है नन्हा पौधा
दो बूँद पानी पीकर।
कोमल–कोमल नन्हे पत्ते,
खिल उठना चाहते हैं।
ये नन्हे पौधे धरती में समाकर,
और बढ़ना उगना चाहते हैं।
पंछी देख रहे हैं आकाश,
जल्दी बड़ा हो पौधा, काश!
बड़े होने पर घोसला बनाएँगे,
मेरे बच्चे भी राग सुनाएँगे।
पौधे भी बढ़ना चाहते,
पंछियों संग खेलना चाहते।
चाहते बसाना पंछियों का बसेरा,
सुनना चाहते राग, जब हो सवेरा।

हर्षित राज, कक्षा 9, पटना (बिहार)

औजस्वी, कक्षा 5, गौरीगंज

अद्धिति चौड़ा, कक्षा 9, अहमदाबाद

कीर्ति गोयल, कक्षा 4, सिलीगुड़ी

महक प्रज्ञा बोथरा, कक्षा 8, दिल्ली

अक्षाय कुमार, कक्षा 8, बीकानेर

आप भी अपनी **कलम और कूँची** का कमाल
हमें मोबाइल नं. 9351552651 पर या
पत्रिका के पते पर भेजें।

पृथ्वी दिवस : 23 अप्रैल

सौर मंडल में पृथ्वी ग्रह है अनोखा। प्रदूषण फैला कर ना दो इसको धोखा ।।

ममता

पूजा

कृष्णा

अश्विनी

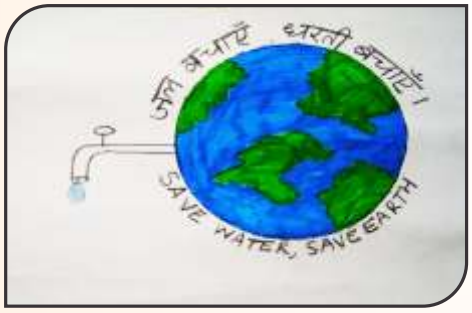

मनीषा

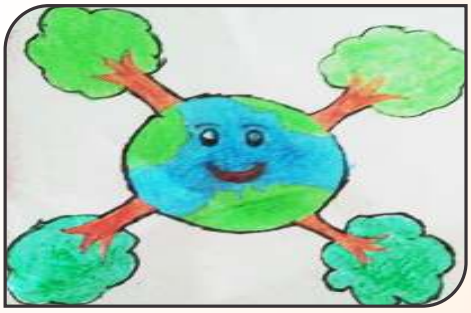

निरमा

खुशी

धरती का हर रंग, आज है बदरंग
लगे ढेर हैं कूड़े के, नदी ताल सब हैं सूखे
कभी बाढ़ कभी सूखा, मिज़ाज मौसम ने है बदले
ना बर्फ़ पड़े न बरख़ा, समय चक्र है बदला
हम जब तक ना बदलेंगे, धरती का हाल ना बदलेगा।

दक्षा निरमा (चंदलाई)

सामग्री सौजन्य : आई. आई. एफ़. एल. फाउंडेशन द्वारा गांवों में संचालित सखियों की बाड़ी केंद्र, ब्लॉक- प्रतापगढ़

नन्हा अखबार

देश व दुनिया की खबरें जो आप जानना चाहेंगे

विचित्र जुड़वाँ बहनें

जुड़वाँ बच्चे एक जैसे होते हैं लेकिन जापान में आकायामा में रहने वाली जुड़वाँ बहनों योशी और मिशी किकुची के कद में जमीन आसमान का फर्क है। इसी वजह से दोनों का नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड में दर्ज किया गया है। योशी का कद 5 फीट 4 इंच है जबकि मिशी का कद 2 फीट 10.5 इंच है। मिशी का कद हड्डियों से जुड़ी बीमारी के कारण नहीं बढ़ सका।

जमी हुई पेंगोग झील पर हाफ मैराथन

केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख ने 13,862 फीट ऊँची पेंगोग झील में शून्य से कम तापमान पर पहली बार 21 किलोमीटर दौड़ का आयोजन कर इतिहास रच दिया। इसे गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड में दुनिया की सबसे ऊँची जमी हुई झील पर हॉफ मैराथन के रूप में दर्ज किया गया है। चार घंटे चली मैराथन लुकुंग से शुरू हुई व मान गाँव में समाप्त हुई। इसमें 75 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया।

73वें साल में पूरा किया सपना

आंध्र प्रदेश के कंडपा जिले की पेशे से चिकित्सक 73 वर्षीय डॉ. वेमिरेड्डी सुलोचना देवी अब लेखिका भी बन चुकी हैं। उन्होंने पाँच किताबें लिखी हैं। वर्ष 2006 में पति के निधन के बाद सुलोचना ने अपना एकाकीपन दूर करने के लिए किताबें लिखना एवं अनुवाद करना शुरू किया। उनकी पहली अनुदित किताब वर्ष 2013 में प्रकाशित हुई थी।

रमा ने फतह किया माउंट किलिमंजारो

मनाली, हिमाचल प्रदेश की 34 वर्षीय रमा ठाकुर ने हाल में अफ्रीका की सबसे ऊँची चोटी माउंट किलिमंजारो 5685 मीटर पर चढ़ाई कर देश का नाम रोशन किया है। रमा माउंट किलिमंजारों को फतह करने वाली राज्य की पहली महिला बन गई हैं। रमा का कहना है कि अब उनका अगला लक्ष्य वर्ष 2024 में माउंट एवरेस्ट को फतह करना है।

देश में पहली इलेक्ट्रिक एसी डबलडेकर बस

बृहन्मुंबई इलेक्ट्रिक सप्लाई एंड ट्रांसपोर्ट ने देश की पहली इलेक्ट्रिक एसी डबल-डेकर बस का उद्घाटन किया। यह बस कुर्ला बस डिपो और बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स के बीच चलेगी। 5 किलोमीटर की दूरी के लिए न्यूनतम 6 रुपए किराया लिया जाएगा। इस बस में 73 लोग बैठ सकते हैं। इस बस में सीसीटीवी कैमरे और स्वचालित दरवाजें लगे हैं।

महिला लोको पायलट ने चलायी वंदे भारत एक्सप्रेस

एशिया की पहली महिला लोको पायलट सुरेखा यादव ने आज वंदे भारत एक्सप्रेस को सोलापुर से सीएसएमटी तक चलाया। महाराष्ट्र के सातारा की रहने वाली सुरेखा यादव 1988 में भारत की पहली महिला ट्रेन ड्राइवर बनीं और उन्हें राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है।

Secret of Indian Sweets

- **Jalebi -** Your shape doesn't matter, your nature does .No matter how messed up you look or life is , keeping a sweet tone will always help .

- **Rasgulla -** No matter how much you are squeezed by circumstances, never forget who you are . Come back to your original self. Be resilient.

- **Boondi Ladoo -** Every little drop of boondi matters. Similarly little and continuous efforts can bring in miraculous results. Continue doing little things, success will follow.

- **Soan papdi -** Not everyone likes you, yet the maker doesn't stop to make you. Pursue your goals , irrespective of validation.

- **Gulab jamun-** Your softness is not your weakness, it can be your strength. Softness is a quality much appreciated, be proud of it.

- **Besan k Ladoo -** If you get shattered due to pressure, you can always rebuild. It's a symbol of hope. No matter what goes wrong, we can always fix it.

जन्मदिन की बधाई

17 अप्रैल

सोनाली जैन
कांकरोली

26 अप्रैल

अयान चौहान
बीकानेर

28 अप्रैल

लविशा कांठेड़
भीलवाड़ा

दादा जी की छड़ी

दादा जी आज सुबह–सुबह सैर के लिए निकल ही रहे थे कि अचानक उनके पाँव ठिठक गए और वे किसी चीज की तलाश में इधर–उधर, यहाँ–वहाँ घूमने लगे। दादा जी कुछ परेशान लग रहे थे। उधर सैर में जाने के लिए देरी हो रही थी। तभी उनका आठ साल का नन्हा पोता दिव्य आया और कहने लगा– "दादा जी! दादा जी! आप क्या ढूँढ़ रहे हैं?"

दादा जी कुछ परेशान होकर जवाब देते हैं– "बेटा! मेरी छड़ी कहीं गुम हो गई है, मैं उसको ही ढूँढ़ रहा हूँ।" तब दिव्य ने कहा– "दादा जी आप रोज–रोज उस छड़ी को हाथ में पकड़ कर क्यों जाते हैं? आखिर उस छड़ी में ऐसा क्या है?" अपने पोते के इस जिज्ञासा भरे प्रश्नों को सुनकर दादा जी आश्चर्यचकित हो कहते हैं– "ठीक है! ठीक है बेटा! इन सभी प्रश्नों के उत्तर मैं तुम्हें बाद में बताऊँगा। पहले तुम मुझे यह बताओ कि क्या तुमने मेरी छड़ी को कहीं देखा है ?"

दिव्य बोला– "नहीं दादा जी! पर छड़ी घूम गई है तो क्या हुआ, मैं आपकी छड़ी बन सकता हूँ न! आज आप मुझे छड़ी बना लीजिए। आपको जहाँ जाना होगा मैं ले जा सकता हूँ।" इतना सुनते ही दादा जी अवाक रह गए। तब दादा जी बोले– "बेटा तुम तो बहुत समझदार हो गए हो। जिस छड़ी के लिए मैं इतने समय से परेशान था। उस तकलीफ को तुमने झट से एक ही पल में दूर कर दिया। वाह! शाबाश! बेटा!" ऐसा कहते हुए दादा जी अपने पोते को सीने से लगा लिया। तभी दादा जी छड़ी के बारे में बताते हैं– "जैसे बुढापे में तुम मेरा सहारा बनके साथ चलना चाहते हो, वैसा ही सहारा हमारी छड़ी होती है बेटा! अब मुझे किसी छड़ी की आवश्यकता नहीं है! अब से तुम ही मेरे लिए छड़ी हो।"

दादा जी मन ही मन सोचने लगे कि काश! ऐसे संस्कार सभी बच्चों को मिल पाते, तो सभी को अपने पोते का सहारा मिल जाता। तभी दिव्य कहता है– "दादा जी! आप क्या सोच रहे हो?" दादा जी– ''कुछ नहीं बेटा! कहते हुए फिर दोनों उत्साहित हो सैर के लिए निकल जाते हैं।

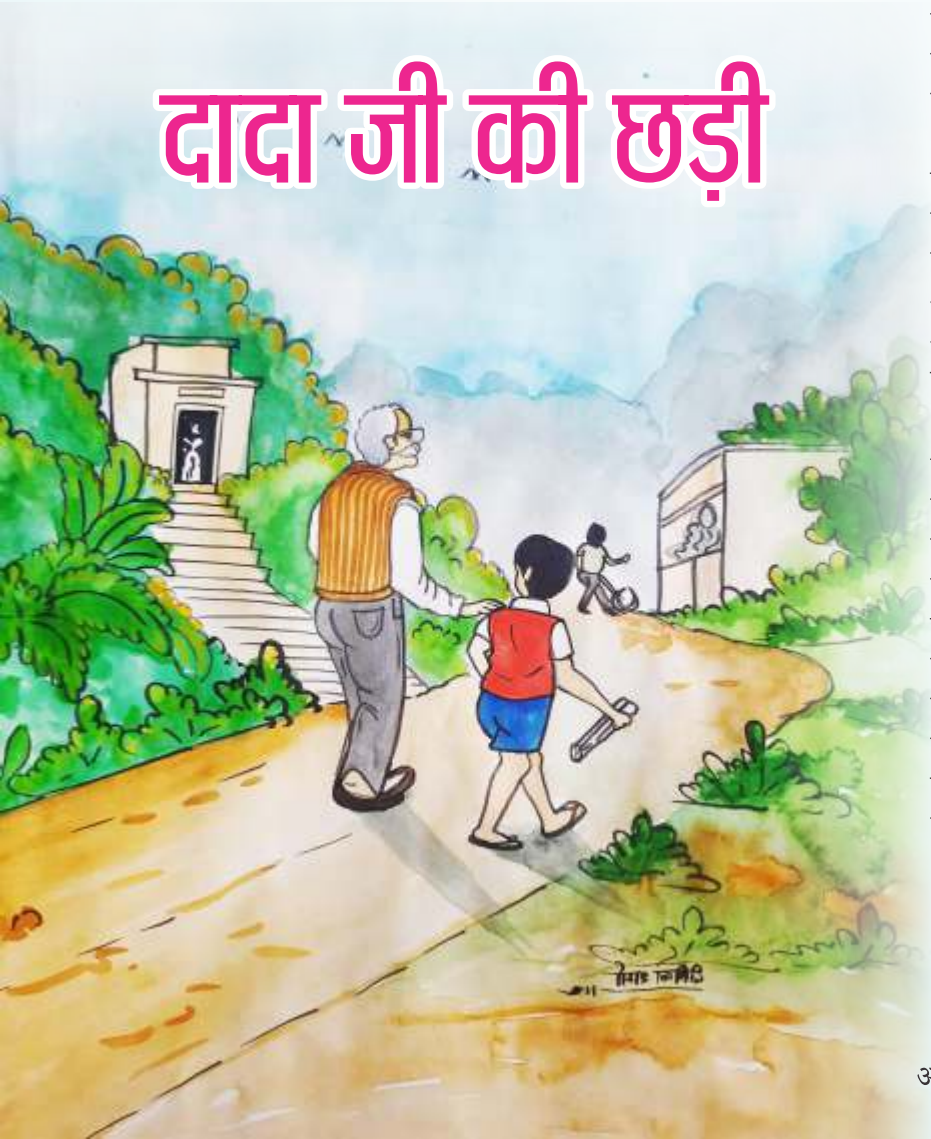

अशोक पटेल 'आशु'
शिवरीनारायण (छत्तीसगढ़)

रंग बिरंगे सुन्दर तोते

क्या आपको मालूम है कि तोते आपकी मोबाइल की रिंगटोन की भी नकल कर सकते हैं। आपकी मोबाइल फोन की घंटी की आवाज की हूबहू नकल करते तोते बहुत चालाक होते हैं। यह झुंड के झुंड आपको टें टें टें की आवाज करके परेशान कर सकते हैं। अगर आपने इन्हें पालतू बनाकर पिंजरे में रखा है तो मौका पाकर निकल भागते है और उस पिंजरे की तरफ भूल से भी नहीं देखते हैं।

दुनिया में तोते की तीन सौ से अधिक प्रजातियाँ अभी भी पाई जाती है। इनमें ब्राजील का जलकुंभी तोता तो अपनी चोंच से अखरोट और नारियल को भी तोड़ कर गिरी खा जाता है। जलकुंभी तोता तीन फीट तीन इंच तक लम्बा होता है और गहरे नीले रंग का बहुत चालाक पक्षी है। इसकी चोंच के आसपास पीले रंग की पट्टी होती है। यह उड़ने वाला सबसे बड़ा तोता है।

मैका और मकाऊ तोते आकार में बहुत बड़े होते हैं और न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया में पाए जाते हैं। भारत का तोता हरे रंग, काले कंठ और लाल पीली चोंच वाला होता है। सारे तोते पेड़ की कोटर में अपना घोसला बनाते और आठ तक अंडे देते हैं। सभी तोतों के अंडों का आसमानी रंग होता है।

तोते अपने पंजों को आदमी के हाथ की तरह प्रयोग कर सकते हैं और मनुष्य की आवाज को कान लगा कर बड़े गौर से सुनते हैं। बीस तरह की आवाजें तोते नकल कर सकते हैं और मनुष्यों की शक्ल पहचानते हैं।

तोतों की सुन्दरता ही इनका अभिशाप है। आदिकाल से मनुष्य तोतों को पकड़ कर पिंजड़े में कैद कर के पालता रहा है। ईसा से भी हजारों साल पहले से भारत, मिश्र और चीन में तोते पाले जाते थे। प्रसिद्ध दार्शनिक अरस्तू ने भी एक तोता पाल रखा था। महारानी विक्टोरिया तोता पालने की शौकीन थी। अधिकांश शाही परिवार के महलों में तोते पाले जाते थे।

भारत की प्राचीन कथा कहानियों में शुक, सारिका के किस्से मिलते हैं। किस्सा तोता मैना मशहूर है जिसका कई भाषाओं में अनुवाद हुआ है। बीसवीं शताब्दी से तोतों का पंखों व मांस के लिए शिकार किया जाने लगा और पालतू बना कर पिंजड़े में रखा जाने लगा तो भारत सहित दुनिया भर की सरकारों ने तोता पकड़ने, मारने, पालने पर रोक लगा दी है।

आज कई प्रजातियों के तोते लुप्त हो गए और तोते के जीवन पर संकट है। सुन्दर पंखों के कारण तोतों का सबसे बड़ा दुश्मन इनसान है।

किसी ने कहा है –

पराधीनता दुख महा, सुख जग में स्वाधीन।
सूखी रमत सुक बन विषय, कनक पींजरा दीन।।

शिवचरण चौहान
कानपुर (उत्तर प्रदेश)

किड्स कॉर्नर

– वेणु वन्नियाथ

Little Bunny is drawing

Little Bunny has drawn some pictures. Their names are written below. But some letters are missing. Write the missing letters.

f _ o _

_ i r _

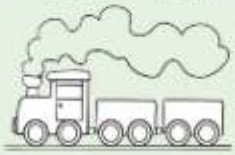

t _ _ i n

_ r u _

Draw a circle

Write the names of all pictures. Then, draw circles around the words that start with 'k'.

Count and write

Count the number of black spots in each set and write in the given space.

=

=

=

=

Services offered

Domestic Courier Cargo
Full Truck Movement
PTL
Intentional

AGC International

Celebrating 33 YEARS 1989-2022

AGC

AkashGanga®

Integrity at work

ISO 9001:2008 Certified Company

AKASH GANGA COURIER LIMITED

Corporate office : 807, Block-k2, Behind Maruti Showroom,
Near Maruti Workshop, Vasant Kunj Road, Mahipalpur,
New Delhi-110037 E-mail : delhi@akashganga.info

Regional Office : Ahemdabad • Banglore • Chennai
Jaipur • Kolkata • Mumbai • Patna • Siliguiri • Surat

अणुव्रत अमृत महोत्सव

अणुव्रत आंदोलन अपने गौरवशाली 75वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है। 21 फरवरी 2023 को गुजरात के खेरोज गाँव में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने "अणुव्रत अमृत महोत्सव" के शुभारम्भ की घोषणा की। उन्होंने इस वर्ष अपनी पदयात्रा को "अणुव्रत यात्रा" का नाम दिया है।

देशभर में अमृत महोत्सव के शुभारम्भ दिवस पर कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। देशभर में फैली अणुव्रत समितियों और अणुव्रत मंचों के वृहद् नेटवर्क के माध्यम से अणुव्रत आंदोलन की प्रतिनिधि संस्था अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में वर्ष पर्यन्त अनेकानेक कार्यक्रमों की आयोजना की जाएगी।

RNI No. 72125/99
Postal Reg. No.: RJ/UD/29-157/2022-24
Posting Date : 27 & 29
Posted at : Kankroli

ज्योतिराव गोविंदराव फुले

जन्म : 11 अप्रैल, 1827 ■ निधन : 28 नवम्बर, 1890

आप महाराष्ट्र में अछूतोद्धार और महिला शिक्षा का काम आरम्भ करने वाले महान् भारतीय विचारक, समाज सेवी, लेखक, दार्शनिक तथा क्रान्तिकारी कार्यकर्ता थे। दलितों और निर्बल वर्ग को न्याय दिलाने के लिए ज्योतिबा ने 'सत्यशोधक समाज' स्थापित किया। उनकी समाजसेवा देखकर 1888 ई. में मुंबई की एक विशाल सभा में उन्हें 'महात्मा' की उपाधि दी। वे बाल-विवाह विरोधी और विधवा-विवाह के समर्थक थे। महात्मा फुले की किताब 'गुलामगिरी' में बताये गये विचारों के आधार पर पश्चिमी और दक्षिणी भारत में बहुत सारे आंदोलन चले।

बच्चों का देश
राष्ट्रीय बाल मासिक